लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

चौबीसवाँ

2021-22

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ।

हिन्दी पत्रिका

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका

चौबीसवाँ अंक

2021-22

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	◉	**श्रीमती यशोधरा रॉय चौधुरी** प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	◉	**श्री तन्मय जाना** , वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
प्रधान संपादक	◉	**श्री रेबती रंजन पोद्दार**, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	◉	**श्री चन्दन कुमार बढ़ई**, हिन्दी अधिकारी
उपसंपादक	◉	**श्री सन्नी कुमार**, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	◉	**श्री जितेंद्र शर्मा**, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) **श्री कुन्दन कुमार रविदास**, कनिष्ठ अनुवादक **श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह**, कनिष्ठ अनुवादक
टंकण कार्य	◉	**श्री अतुल कुमार**, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते हैं।

यशोधरा रॉय चौधुरी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

'वंदे मातरम' के 24वें को आप सबके समक्ष भेंट करते मुझे अगाध प्रसन्नता हो रही है। हमारा देश विविधताओं का देश है। खान – पान, वेशभूषा, रीति – रिवाज़ सबमें इतनी अधिक विविधता है कि इनके बीच एकसूत्रता स्थापित करने का दायित्व हिन्दी ही निभा सकती है। हिन्दी ने भी अपने इस दायित्व का निर्वाह करते हुए देश और देशवासियों को जोड़ने का सफल प्रयास किया। आम लोगों से लेकर सरकारी काम काज की भाषा के रूप में हिन्दी आज पूरे देश में व्यापक स्तर पर प्रयोग की जा रही है।

हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'वंदे मातरम' भी हिन्दी की इस यात्रा को अविरल चलाये रखने में एक सांकेतिक लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कार्यालय परिवार ने पत्रिका के प्रत्येक अंक में अपना योगदान देकर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया है।

सुधी पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया ने पत्रिका परिवार को अपना कार्य इसी उत्साह से करते रहने का संबल प्रदान किया है और आगे भी इसी ज़िम्मेदारी से कार्यालय इसे संपुष्ट करेगा, ऐसी मेरी आशा है ।

कार्यालय परिवार को पत्रिका के प्रकाशन पर ढेरों बधाईयां एवं इसके उज्ज्वल भविष्य हेतु असीम शुभकामनायें ।

यशोधरा रॉय चौधुरी

तन्मय जाना
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

'वंदे मातरम' का 24वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। लगभग दो वर्षों से हम सभी एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट से गुजर रहे हैं। कभी जीवन एकदम ठहर सा गया तो कभी धीरे- धीरे इसने रफ्तार पकड़ी। यह संकट निकट भविष्य में खत्म होता दिख भी नहीं रहा। लेकिन इस संकट ने यह अवश्य बता दिया कि जीवन कभी रुकता नही, हमारे कार्यालय ने भी इस मर्म को समझा तथा सभी बाधाओं को पार करते हुए अपने तय लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील रहा।

मुझे प्रसन्नता होती है कि हमारे कार्यालय के अधिकारी/ कर्मचारीगण राजभाषा के विकास के प्रति सजग हैं तथा हिन्दी के रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर 'वंदे मातरम' को नए आयाम तक पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहेंगे और राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय देते रहेंगे। साथ ही पत्रिका के संवर्धन के लिए पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा भी रहेगी।

कार्यालय और पत्रिका परिवार को इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए बहुत – बहुत बधाई।

तन्मय जाना

तन्मय जाना

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक) हिन्दी अधिकारी

संपादकीय

मनुष्य के निरंतर विकास क्रम में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव अपनी मेधा, बुद्धि तथा अनुभव से प्रगति करता है। ज्ञान के कारण ही मनुष्य अन्य जीवों से स्वयं को श्रेष्ठ मानता है। भाषा एवं लिपि ज्ञान के संवाहक हैं। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाता है तथा मानव प्रगति की निरंतरता बनी रहती है। यदि ज्ञान के आदान-प्रदान का माध्यम विदेशी भाषा हो तो कठिन स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

हिंदी हमारी राजभाषा है। भारत की विभिन्न भाषाओं को एक सूत्र में पिरोकर हिंदी सहज एवं सरल गति से चलने वाली जनभाषा है। इस भाषा में अभिव्यक्ति हमें राष्ट्रीय गौरव प्रदान करता है। इस भाषा में शासकीय कामकाज करने से राष्ट्रीय चेतना प्रस्फुटित होती है।

वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा हेतु आवश्यक सामग्री हिंदी पाठ्य में सहज ही उपलब्ध है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी का वर्चस्व बढ़ा है। मीडिया, मनोरंजन, कथेत्तर साहित्य, व्यापार आदि में भी हिंदी अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज करा रही है।

आशा करता हूँ कि कार्यालयीन पत्रिका पत्रिका "वन्दे मातरम्" का चौबीसवाँ अंक विगत अंकों की भांति आपको पसंद आएगा। कृपया आप अपने सुझाव/ अभिमत हमें भेजें ताकि हम इस पत्रिका को अधिक सुरुचिपूर्ण एवं सार्थक बनाने में सक्षम हो सकें।

चन्दन कुमार बढ़ई
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

क्र. हिंदी अनुभाग/पत्रिका-16/2021-22/73
दिनांक: 14-02-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा/हिंदी),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स-2, [illegible]
कोलकाता-700001

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 21 वें अंक के प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 21 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषय के अनुसार रचनाओं का बखूबी प्रणयन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ बहुत आकर्षक है। मनमोहक छायाचित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

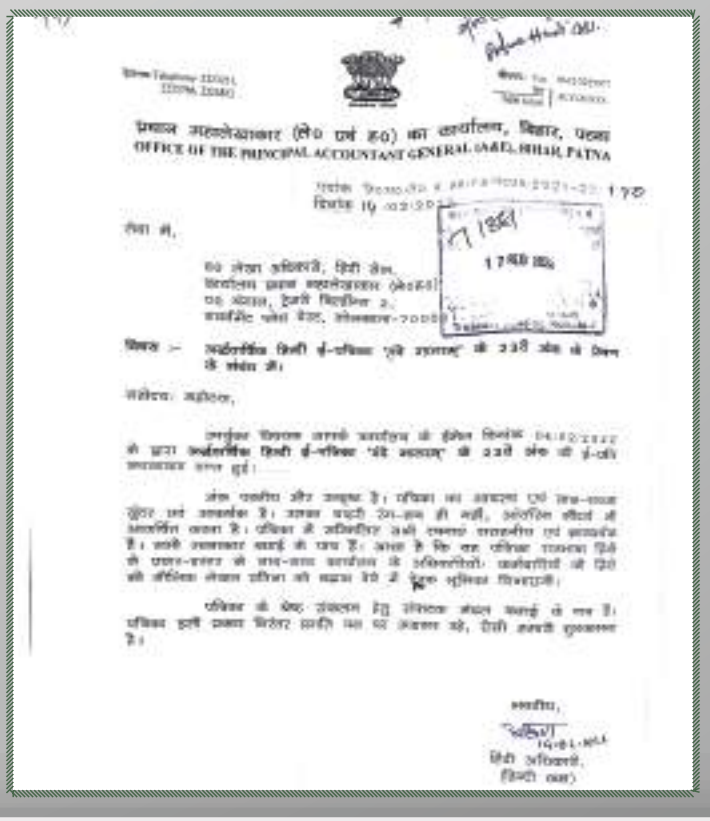

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

17 FEB 2022

भवदीय,
(एम.के. पारेख)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

प्रधान महालेखाकार (लेo एवं हo) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

[illegible] 2021-22/ 170
दिनांक 16.02.2022

17 FEB 2022

सेवा में,
[illegible]

विषय :- [illegible] हिंदी ई-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 23वें अंक के [illegible] के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भवदीय,
16.02.2022
हिंदी अधिकारी,
(हिंदी कक्ष)

आपके पत्र

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, [illegible]
भुवनेश्वर -751017 (ओडिशा)

क्र.- [illegible]/2021-22/18 दिनांक- 11.02.2022

सेवा में,
[illegible]
कोलकाता -700001
ईमेल- [illegible]

विषय- [illegible]

महोदय/महोदया,
[illegible]

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	[illegible]	[illegible]
2.	[illegible]	[illegible]
3.	[illegible]	[illegible]
4.	[illegible]	[illegible]
5.	[illegible]	[illegible]
6.	[illegible]	[illegible]

[illegible]

भवदीय,

[illegible]
हिंदी अधिकारी

[illegible]

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: [illegible]-11005/32/2021-22 दिनांक 15/02/2022

[illegible]
प्रधान महालेखाकार [illegible],
[illegible] कोलकाता - 700 001

विषय:- हिन्दी [illegible] पत्रिका [illegible] के 23वें अंक की [illegible] के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी [illegible] पत्रिका [illegible] के 23वें अंक की प्राप्ति हुई, [illegible]

पत्रिका के सभी रचनाकारों [illegible] पत्रिका के [illegible] के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

[illegible] Singh
Sr.Audit Officer

राजभाषा अनुभाग

आपके पत्र

प्रधान महालेखाकार (ले.प.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके पत्र

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	गणतंत्र दिवस	मो. इमरान	1
2.	वृक्ष का दर्द	सुश्री अलिषा मौर्या	2
3.	ओडिशा भ्रमण	श्री सुमित कुमार वर्णवाल	5
4.	त्याग	श्री सूरज किशोर	9
5.	बचपन सुहाना	श्री संजय कुमार	12
6.	स्टेटस	सुश्री आरती शर्मा	13
7.	पाटलिपुत्र	श्री सन्नी कुमार	16
8.	अजीब दास्तां है ये.....1	श्री आशीष कुमार	20
9.	मेरी आवाज ही .... पहचान है	श्रीमती सुस्मिता सरकार	25
10.	बयान-ए-इश्क़	श्री आनंद कुमार पाण्डेय	29
11.	शहर में घर	श्री अंकित कुमार झा	32
12.	सुनीता का संसार	श्रीमती लिपिका दास	34
13.	कोरोना के लाभ	श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह	36
14.	सच्ची घटनाएँ	श्री रेबती रंजन पोद्दार	40
15.	वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिक-रण	श्री जितेन्द्र शर्मा	44
16	बंग दर्पण	श्री चन्दन कुमार बढ़ई	49
17	टिफिन	श्री अतुल कुमार	53

टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।

मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 1950 को हमारा देश गणतंत्र बना। गणतंत्र दो शब्दों से मिलकर बना है, "गण" अर्थात लोग या जनता और "तंत्र" यानि राज। अर्थात गणतंत्र का अर्थ हुआ जनता द्वारा राज। भारत देश जब आजाद हुआ तो सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि इसे चलाएगा कौन अर्थात यह राजा द्वारा शासित होगा या लोकतंत्र बनेगा। इस समस्या के समाधान के लिए एक संविधान सभा का गठन किया गया, जिसकी पहली बैठक 9 दिसम्बर 1946 में दिल्ली पुस्तकालय भवन में हुई और 11 दिसम्बर 1946 में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को इस सभा का अध्यक्ष चुना गया। संविधान सभा को लगभग 2 वर्ष 11 महीने और 18 दिन लगे हमारे भारत देश के संविधान के निर्माण में। अंतत: 26 नवम्बर 1949 को संविधान को अंगीकार कर 26 जनवरी 1950 को लागू कर दिया गया अर्थात इस दिन हमारा देश एक गणतंत्र के रूप में उभरा।

इस साल हमारा देश 73वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजपथ में भव्य गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन होता है। राष्ट्रपति तिरंगा फहरा कर समारोह का उद्घाटन करते हैं। ध्वजारोहण के साथ ही राष्ट्रगान होता है और उन्हें 21 तोपों की सलामी दी जाती है। अशोक चक्र और कीर्ति चक्र जैसे सम्मान दिये जाते है। इसके साथ हर राज्य अपनी-अपनी झाँकियों का प्रदर्शन करते है जो भारत की विविधता में एकता को दिखाती है। हर वर्ष इन झांकियों में से एक झांकी को सर्वश्रेष्ठ झांकी का पुरस्कार मिलता है। इस दिन भारत की तीनों सेनाएँ नौ सेना, थल सेना तथा वायु सेना परेड करती हैं और अपनी शकतियों का प्रदर्शन करती है। 29 जनवरी को "बीटिंग रिट्रीट" सेरेमनी के साथ गणतंत्र दिवस का समापन होता है।

मो. इमरान
एम.टी.एस.

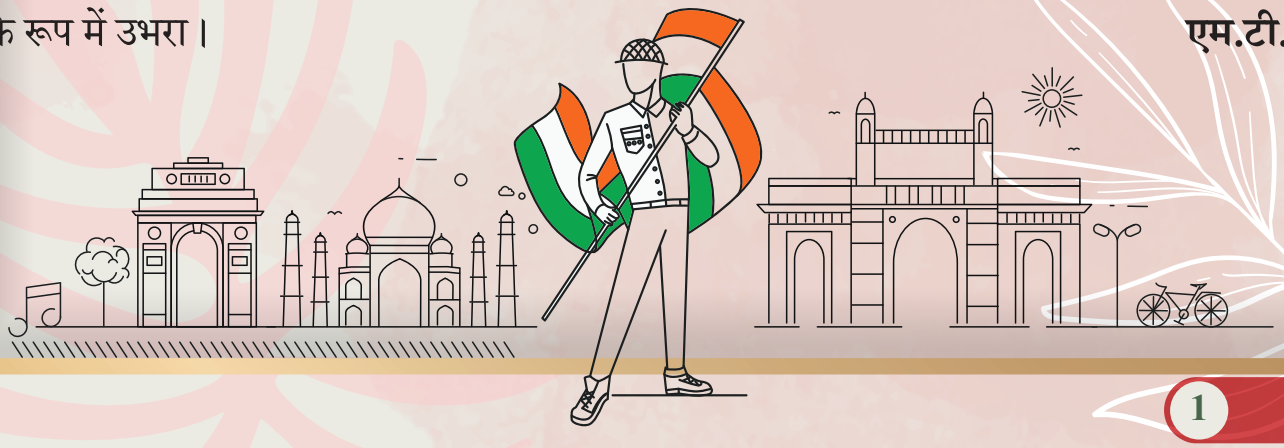

वृक्ष का दर्द

आज फिर से पूरा गाँव इकट्ठा हुआ है। न जाने, आज क्या होने वाला है? लोग मेरे चबूतरे के इर्द-गिर्द खड़े होकर न जाने क्या बातें कर रहे हैं। ये सब देखकर मेरी धड़कने तेज हो गई हैं। आज की पंचायत में क्या होने वाला है, ये सोचकर मेरा दिल बैठा जा रहा है।

मुझे आज भी अच्छे से याद है, वर्षों पहले की वो पंचायत, जिसके फैसले के कारण मेरा पूरा परिवार उजड़ गया और मैं अकेला निःसहाय रह गया। मेरी आँखें महीनों तक निरंतर बहे जा रहे थे और रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। देखो, आज फिर से उन्हें याद करके आँखें छलक आयी है। हे ईश्वर! क्या मेरी आँसू मेरा दर्द, पीड़ा ये मानव महसूस नहीं कर सकते। मैं तो बोल भी नहीं सकता फिर मैं अपनी दुःख, अपनी पीड़ा किसे बताऊँ और कैसे बताऊँ। प्रभु! याद है, जब आपने मानवों की रचना की थी और कहा था कि "मानव" मेरी रचनाओं में सर्वोत्तम रचना है। जिसमे अथाह प्रेम दया और करुणा का भाव समाहित है। वह किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचा सकता। और इस प्रकृति का रक्षक होगा। परन्तु आज तो ये रक्षक ही भक्षक बन बैठे हैं।

वो भी क्या दिन थे, जब हमारा भी एक हँसता खेलता परिवार हुआ करता था, जिसे मानव वन/जंगल कहते हैं। हरे-भरे पेड़-पौधे रंग-बिरंगे फूलों व फलों से युक्त हमारा घर तेज हवाओं के चलने पर अठखेलियाँ करते तने, सूर्य की किरणों के साथ चिड़ियों की चहचहाहट, बारिश के फुहारों के साथ झूमना- गाना सब मनभावन था| न जाने कितने जीव-जंतू हमारे ईर्द-गिर्द शरण पाते थे। फिर चाहे हमारी डालों पर चिड़ियों का बसेरा हो या भारी जड़ों के आस-पास छोटे-छोटे जीवों का बिल हो या फिर बड़े जीव जो हमारी छायेँ में आकर शरण लेते हों।

सब कुछ ठीक-ठाक ही चल रहा था कि एक दिन कुछ मानव हमारे घर (जंगल) में प्रवेश कर गए। उन्हें हमारा हंसता खेलता परिवार रास नहीं आया और उन्होंने हमारे घरों में आग लगा दी, जिससे हमारे परिवार के कई सदस्य मारे गए तथा बहुत सारे जीव भी मारे गए | जलते

हुए उन्हें देखकर व उनकी चीख़ों को सुनकर अन्य परिवार जन भी मूर्छित हो गए। आज भी मेरी कानों में उनकी चीख- चिल्लाहट की आवाजे गूँजती है और जब भी मैं उन पलों को स्मरण करता हूँ मेरी आँखों से निकलने वाली आँसू थमने का नाम नहीं लेते| उस जगह पर जहाँ मेरे परिवारजनों के राख पड़ें थे, मानवों ने खेती करना प्रारंभ कर दिया | धीरे-धीरे वे और भी पेड़ो को जलाकर वहीं बसने लगे और यह क्षेत्र एक घनी आबादी वाले गाँव में तब्दील हो गया।

अब हमारा परिवार सिमटकर काफी छोटा हो गया है। मैं अपने परिवार में सबसे बड़ा और घना पेड़ हूँ। गाँव के लोग गर्मी के दिनों में मेरे ही छाँव में बैठकर आराम करते हैं। छोटे छोटे बच्चे हमारे इर्द-गिर्द खेला करते | कभी-कभी तो वे हमारे ऊपर चढ़कर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाया करते और हमारी पत्तियों, फूलों, फलों तथा तनों को तोड़ा करते। जब मनुष्य को थोड़ी सी चाकू की धार लग जाती है और खून निकलने लगता है तो उन्हें कितनी तकलीफ होती है वे उसका मरहम-पट्टी करते हैं जब हमारे तनो को कुल्हाड़ी व ब्लेड से काटा जाता है तो हमें कितनी कष्ट होती है, यह मानव क्यों नहीं महसूस करते। जब बच्चे हमारी फलों को गिराने के लिए पत्थरों से हमारे ऊपर प्रहार करते हैं हमारा शरीर कितना कष्ट झेलता है। हम उन्हें खाने के लिए फल देते हैं और बदले में हमें क्या मिलता है ढेर सारे घाव, क्षत-विक्षत हुआ हमारा शरीर।

चूंकि मैं सबसे घना वृक्ष हूँ अत: मेरे चारों ओर चबूतरा बना दिया गया। गाँव में जब भी पंचायत होता मेरे ही चबूतरे पर होता। हमेशा किसी न किसी मुद्दे पर पंचायत होता ही रहता। एक दिन पंचायत में स्कूल का मुद्दा उठा। उन्होंने निर्णय किया कि गांव में एक स्कूल होना चाहिए जहाँ बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सके। फिर बात हुई कि स्कूल कहाँ खोला जाए। कोई भी अपनी जमीन देने को तैयार नहीं हुआ। अत: यह फैसला हुआ कि इस पेड़ को छोड़कर यहाँ आस-पास के पेड़ों को काटकर इसी भूमि पर स्कूल बनाया जाए। यह सुनते ही मेरे कान सन्न से हो गए। ऐसा लगा जैसे एक ही पल में सबकुछ छिन गया हो। "अगर मैं मानव होता तो मैं पंचों के पाँव पकड़ लेता और उनसे विनती करता कि हे पंच परमेश्वर! मेरे साथ ऐसा अन्याय ना करें। मेरे समस्त परिवारजनों के साथ ऐसा ना करें। अगर मौत ही देना है तो हमें भी दे दें क्योंकि मैं इतना

बड़ा दुःख सहन नहीं कर पाऊँगा।" लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मैं मानवो की तरह बोल नहीं सकता, चल नहीं सकता। हे ईश्वर! अब आप ही हमारी सहायता करें। ये मानव तो हमें सुन नहीं सकते किन्तु आप तो सुन सकते हैं ना। हे प्रभु! इस अन्याय को होने से रोक लीजिए।

सुबह होते ही पेड़ों को काटा जाने लगा। कुल्हाड़ी के एक-एक प्रहार के साथ जो चीखें और दर्द से कराहने की आवाज निकलती, वह मेरे हृदय को झकझोर देती और मैं असहाय व लाचार की तरह उन्हें कटते हुए देखता रहा। प्रकृति ने हम वृक्षों को ऐसा क्यों बनाया? हमें आत्मरक्षा हेतु कुछ क्यों नहीं दिया?

अब मैं अपने परिवार में एकमात्र सदस्य बचा हूँ। मेरे पास ही एक स्कूल का निर्माण भी हो गया है। छोटे छोटे बच्चे मेरे पास आकर खेलने हैं। ऐसे ही सब कुछ चलता रहा।

एक दिन एक जमींदार का लड़का मेरे (वृक्ष) चढ़ गया और डालों को हिलाने लगा। इसी क्रम में उसका पैर फिसल गया और वह जमीन पर गिर गया। उसका सिर फट गया और उसका काफी रक्त बह गया। गाँव के लोग उसे डॉक्टर के पास ले गए, किन्तु वे उसे बचा नहीं सके। जमींदार इसी बात से बहुत दुःखी था।

आज यह पंचायत उसी जमीदार ने बुलाया है। मेरा मन आज बहुत अशांत है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई अनहोनी होने वाली हो। खैर, पंचायत शुरू हो चुकी है। जमींदार ने अपना पक्ष रखते हुए कहा कि "जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि अभी कुछ ही दिनों पहले मेरे पुत्र की मौत इस पेड़ से गिरने के कारण हुई है। आज मैंने अपना पुत्र खोया है कल किसी और के साथ भी ऐसा हो सकता है। बच्चे तो नादान हैं, नासमझ हैं | हम उन्हें जितना मना करेंगे वे उतना ही शरारत करेंगे और मौके की तलाश करेंगें।" हम कहना चाहते हैं कि हमें इस पेड़ को ही इस जगह से हटा देना चाहिए ताकि फिर से गांव के किसी बच्चे की जान ना जाए। फिर क्या था, गाँव के सभी लोगों ने एकमत से इसपर स्वीकृति दे दी।

आखिर मेरा ही जाने का समय आ ही गया। किसी ने सच ही कहा है कि मुफ्त में मिली चीजों की कोई अहमियत नहीं होती। मैने मानवों को मुफ्त में फूल, फल, लकड़ी, ऑक्सीजन आदि सब कुछ दिया और बदले में हमें क्या मिल रहा मौत। जब मेरे शरीर पर कुल्हाड़ी से प्रहार किया जाएगा, मैं चिल्लाऊँगा। मेरे दर्द से कराहने की आवाज भी होगी लेकिन ये मानव हमारे उस आवाज को सुन नहीं सकेगा | हाय! कोई तो ऐसा मानव होता जो हमारी उस पीड़ा को महसूस कर पाता। यह जान पाता कि हमारे अंदर भी जीवन है। हम बोल नहीं पाते चल नहीं पाते इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारा कोई अस्तित्व नहीं है।

आलिषा मौर्य
एम.टी.एस.

ओडिशा भ्रमण

किसी स्थान की यात्रा करने से न सिर्फ हमें आनंद आता है बल्कि उस स्थान के रहन-सहन, खान-पान का तरीका का भी पता चलता है। यात्रा करने से लोग सकारात्मक महसूस करते है एवं हमारे जीवन को एक नया आयाम भी मिलता है। इसी सकारात्मक सोच के साथ अपने इस ऑफिस के दस सहकर्मी (मित्रों) के साथ भारत के पूर्वी राज्य ओडिशा के कुछ पर्यटक स्थानों के भ्रमण को 24 सितंबर को निकल पड़ा। हमारी ट्रेन शालीमार स्टेशन में रात 8:45 बजे थी और हमलोग प्रातः 5:10 बजे पुरी स्टेशन पहुँच गये। स्टेशन का नजारा बहुत ही मनमोहक थ ा एवं यह स्टेशन बहुत साफ था। पुरी शहर की एक खासियत है कि यहाँ नारियल के पेड़ बाहर जगह-जगह दिख जाते हैं। हम सब का मन रोमांच से भरा हुआ था। एक रोमांच था समुद्र को देखने का। हमलोग ब्लू फ्लैग तट पर पहुँचे। किन्तु वहाँ के कर्मचारियों द्वारा हमें दूसरे वाले तट पर जाने की सलाह दी गयी क्योंकि ओडिशा के माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक जी आने वाले थे। यहाँ आसपास का इलाका एक वी० आई० पी वाला इलाका लग रहा था। हमलोग आगे बढ़कर गोल्डेन बीच (पाम बीच) पर चले गए। यहाँ पर समुद्र की लहरों को देखते ही मन रोमांच से भर उठा। समुद्र की लहर जैसा लहर किसी जलाशय या जलस्रोतों में नहीं हो सकता है।

कुछ लोग बीच पर समुद्र की लहरों को देखकर रोमांचित हो रहे थे। जब की कुछ लोग रहने के लिये होटल की तलाश में लगे थे। हमने कमरे किराये पर

लिये वहाँ अपना सामान रखा और सीधे समुद्र तट पर पहुंचे। स्नान और फोटोग्राफी के बाद हमलोग नाश्ता करने के पश्चात चिल्का झील जाने का सोचने लगे। यह भारत की सबसे बड़ी तटीय अनुपक्षीय (लगून) और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी लगून है। हमलोगों ने एक ट्रेवल एजेंसी का चयन किया। उस एजेंसी ने हमें चिल्का के मुख्य भ्रमण स्थान पर न ले जा कर चिल्का के एक छोटे अप्रचलित स्थान पर ले गया। यहाँ का हर चीज का अनुभव बुरा था। यहाँ एकमात्र खाने का होटल था और वह बहुत ज्यादा महंगा था। कुछ ट्रैवल एजेंसियाँ यात्रियों को मूर्ख बनाते हैं। यहाँ का नौका भ्रमण का किराया भी बहुत

ज्यादा था जिस वजह से हमलोग भ्रमण नहीं किए। हमें ट्रैवल एजेंसी का चयन करते समय सतर्कता बरतनी चाहिए।

खैर शाम में होटल अभिनन्दन आने के पश्चात हमलोग पुनः समुद्र तट पर गए। बीच का नजारा अत्यंत ही स्मरणीय था। यहाँ बहुत सारे सेण्ड - आर्टिस्ट बालू की प्रतिमाओं को बनाते हुए देखे जा सकते हैं। फिर हमलोग जगन्नाथ मंदिर गए। भगवान जगनाथ मंदिर ही ओडिशा के पुरी शहर की पहचान है। यहाँ अन्य जगहों में भी भगवान जगन्नाथ के मंदिर दिख जाते है जो मुख्य मंदिर के अपेक्षा आकार में छोटे हैं। यहाँ का दृश्य भी बहुत मनमोहक था। कोविंड की डबल डोज नहीं होने के कारण हमलोग मंदिर के अंदर प्रवेश नहीं कर पाएँ लेकिन बाहर से ही दर्शन कर लौटे। यहाँ का प्रसाद बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ पर बहुत तरह की मिठाइयाँ भी मिल रही थी। कुछ मिठाइयों का स्वाद मुझे अब भी वहां की याद दिलाता है। रात में भोजन करने के पश्चात कुछ बातचीत की फिर सभी सो गए।

हमलोग सुबह में फिर से समुद्र तट पर गए उगते सूर्य जो कि लग रहा था कि समुद्र से निकल रहा हो, उसे नमस्कार किए। इस बार हमने दूसरी ट्रेवल एजैंसी से बात की जो कि किफायती एवं सही लगा। हम सब एक बस पर सवार हुए जिसमें हमारे अलावे 24 यात्री और थे जिसे ट्रेवल गाइड बालाजी परिवार के नाम से संबोधित कर रहे थे। अगला पड़ाव हमारा चन्द्रभागा बीच था। यहाँ चन्द्रभागा नदी बहती है। माना जाता है यह नदी बिल्कुल सूखी रहती है। यहाँ चन्द्रभागा तट अत्यंत ही आकर्षक लगा। यह भारत का पहला तट है जिसे ब्लू फ्लैग का प्रमाण पत्र मिला है। यहाँ मौसम का मिजाज थोड़ा गड़बड़ दिखा। थोड़े समय के लिए हल्की बारिश के बाद हमलोग कोणार्क के सूर्य मंदिर के लिये रवाना हुए। बारिश के कोणार्क का सूर्य मंदिर वास्तुकला

का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसे सन 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व के धरोहर स्थल के रूप में मान्यता मिली। इस मंदिर का निर्माण गंग वंश के तत्कालीन राजा नरसिंह देव द्वारा करवाया गया। यह कलिंग शैली में बनाया गया है। यहाँ भगवान सूर्य की प्रतिमा, चक्र और धोड़े हमारा ध्यान खींचते हैं। मंदिर का केवल मंडप ही बचा हुआ है जबकि मुख्य मंदिर का ऊपरी हिस्सा टूट गया है। यहाँ भगवान सूर्य की तीनों अवस्था अर्थात बाल्यावस्था, युवावस्था एवं प्रौढावस्था को दर्शाया गया है। इसे ब्लैक पैगोड़ा का मंदिर भी कहा जाता है। यहाँ बने रथ के चक्र से समय का पता किया जाता था ऐसा हमें ट्रैवल गाईड ने बताया। यहाँ पर भोजन करने के बाद हम लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर की और और पश्चात बढ़े।

लिंगराज मंदिर भी कलिंग या उड़िया शैली में बना है। यह भगवान शिव का मंदिर है। यह मंदिर भी भारतीय वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण पेश करता है। इसे ययाति केशरी ने 11वीं शताब्दी में बनवाया था। मंदिर के प्रांगण में बहुत सारे देवी-देवताओं के मंदिर हैं। हमारे देश की वास्तुकला का इतिहास सच में अद्भुत है।

अब हमारा अगला पड़ाव था उदयगिरि एवं खण्डगिरि की गुफाएँ। दोनो सड़क के अलग-अलग छोर पर हैं। खंडगिरि की गुफाओं के साथ यहाँ जैन मंदिर भी है। यह विशेष रूप से जैन भिक्षुओं के लिए निर्माण करावाया गया था। यहाँ से भुवनेश्वर शहर के अधिकांश भाग दिख जाते हैं। खण्डगिरि से उदयगिरि एवं उदयगिरि से खण्डगिरि का दृश्य देखने को बनता है। पहाड़ों में गुफा का निर्माण भी बहुत आकर्षक होता है। यहाँ पर आपको बहुत सारे बंदर दिखलाई पड़ते हैं। पर्यटक उन बंदरों के लिए बिस्कुट और बादाम ले जाते हैं। यहाँ पर समय कब बीत गया पता ही नहीं चला। यहाँ से निकलते ही हमारा अगला एवं अंतिम पड़ाव नन्दन कानन चिड़ियाघर था जो भुवनेश्वर शहर में ही है। यहाँ तरह-तरह के जानवर एवं पक्षियाँ मौजूद थे। मैंने जहाँ भी बाघ देखा है उनके मुकाबले यहाँ के बाघ अधिक आकर्षक प्रतीत हुए। यहाँ एक झील है जो अपने आप में खास है, इसके किनारों पर हरे एव मनमोहक घास का मैदान है जहाँ हमलोगों ने तस्वीरें भी खिंचवाई। कई घंटे यहाँ पर व्यतीत करने के पश्चात बस पर सवार होकर पुनः पुरी की ओर चल दिये। हमारे सहकर्मी मित्र में एक सीनियर भईया को शायरी का शौक है।

उन्होनें बस में शायरी सुनाया जिससे सुनकर सभी लोगों ने उत्साहीत होकर तालिया बजायी। उन्होंने 2-4 और भी शायरी सुनाई। रात में हमारी ट्रेन पुरी से शालीमार के लिये थी। 25 एवं 26 सितम्बर ये दोनों ही दिन हमारा ओडिशा भ्रमण मे बीता। एक दो जगहों के अनुभव को छोड़कर देखे तो हमलोगों को हर जगह एक बेहतरीन अनुभव मिला। परिवार के साथ भी हमें ओडिशा का भ्रमण जरूर करना चाहिए। ओडिशा में हमें उत्तर भारत और दक्षिण भारत की मिली-जुली संस्कृति देखने को मिलती है। हालांकि ओडिशा की अपनी ही एक पहचान है। अब इस राज्य में मुझे दुबारा जाने की इच्छा होती है। अत: अगर हो सके तो आप भी ओडिशा के भ्रमण को जरूर जाएँ।

सुमित कुमार वर्णवाल
एम.टी.एस.

त्याग

रामलाल की आमदनी का एक मात्र स्रोत खेती ही था। वह खेती करता तथा जो अनाज उगाता उसे मंडी में बेचता और उससे जो पैसे मिलते उसी से उसका गुजारा चलता | रामलाल के परिवार में कुल चार सदस्य थे | एक बेटा, एक बेटी तथा पत्नी लीला| बेटा-बेटी की पढ़ाई भी रामलाल सरकारी स्कूल में ही करवाता | उसकी उतनी आमदनी नहीं थी कि वह शहर के अच्छे स्कूल में बच्चों को पढ़ा सके | रामलाल का बेटा सोनू दसवीं में पढ़ता तथा बेटी मुन्नी दसवीं पास कर चुकी थी और उसे आगे की पढ़ाई शहर में करनी थी, उसके लिए उसने अपने पिता रामलाल से बात की । रामलाल ने कहा कि उसकी आमदनी उतनी नहीं है कि आगे शहर भेज कर उसकी पढ़ाई करवा सके | बेटी की शादी में भी बहुत खर्च लभेगा | आगे पढ़कर क्या होगा, शादी करके घर गृहस्थी ही तो बसाना है । उसने बेटी से कहा कि माँ के कार्यों में मदद करे तथा घर-गृहस्थी के काम सीखे | मुन्नी बेबस सी अपने पिता की बातों को चुपचाप सुन रही थी । वह भी अपने पिता की मजबूरी को जानती थी । मुन्नी की माँ लीला यह बात अच्छी से जानती थी कि मुन्नी पढ़ने में बहुत होशियार है । लीला जिस हालात से गुजर रही थी वह अपनी बेटी को उस हालात में नहीं देखना चाहती थी। वह चाहती थी कि उसकी बेटी पढ़-लिखकर नौकरी करे तभी उसकी शादी करेगी | गरीबी में वह जैसे रही है वैसे नहीं चाहती उसकी बेटी भी रहे।

रामलाल से लीला ने बात की पर रामलाल ने कहा "मैं भी अपनी बेटी की खुशी चाहता हूँ, पर मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं । जो अनाज खेत में उगता है उसी से दो वक़्त का खाना नसीब हो पाता है। फिर शहर में दाखिला, वहाँ का खर्च कैसे होगा?" लीला ने कहा "तुम इसकी चिंता मत करो मैं भी कुछ काम करूंगी ।" रामलाल ने भी अपनी बेटी की खुशी के लिए तैयार हो गया । मुन्नी को लीला ने कहा "बेटी तुम शहर के कॉलेज का फॉर्म भर

तथा दाखिला लेकर वहाँ पढ़ाई कर। मैं तथा तुम्हारे पापा पैसे का इंतजाम करेंगे। अपने सपनों को पंख दे दे बेटा।" मुन्नी अपनी माँ की बातें सुनकर उससे लिपट कर रोने लगी | उसे अपनी गरीबी तथा माँ - बाप की विवशता पर बहुत दुख हो रहा था। उसने मन हीं मन प्रण किया कि वह पढ़-लिखकर नौकरी करेगी तथा माँ- बाप को सभी सुख देगी। अपने भाई को भी आगे पढ़ाने की शपथ ली।

मुन्नी ने कॉलेज का फॉर्म भरा। उस समय गरीब बच्चों के लिए स्कॉलरशीप की भी व्यवस्था थी। इस तरह उसकी पढ़ाई का सफर शुरू हुआ। खाली समय में वह बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाया करती। जो फीस मिलती उससे वह कॉपी-किताब खरीद कर पढ़ाई करती | दिन इसी तरह गुजर रहे थे। सोनू ने भी दसवीं की परीक्षा अच्छे नंबरों से पास कर लिया। उसकी माँ दूसरों के घरों में काम करके पैसे इक्कट्ठे करती ताकि दोनों बच्चों की पढ़ाई हो सके। जिंदगी ऐसे ही गुजर रही थी। तभी एक साल बारिश नहीं हुई जिस वजह, से सूखा पड़ गया। अनाज का एक दाना भी खेत में नहीं हुआ। रामलाल की हालत खराब होने लगी, खाने के लिए अन्न का दाना भी नहीं था। लीला ने जो पैसे इक्कट्ठे किए थे जिसे उसने अपनी बेटी को दिए तथा सोनू का भी दाखिला मुन्नी के कॉलेज में हीं करा दिया था। दोनों बच्चे शहर में थे। अपने हालात का सामना रामलाल तथा लीला खुद हीं कर रहे थे। दो दिन तक भूखे रहने के कारण रामलाल की तबियत खराब हो गई। उसे अस्पताल ले जाया गया तब डॉक्टर ने कहा "खाना समय से नहीं खाने से कमजोरी हो गया है इसलिए ये बेहोश हो गए।" लीला जहाँ काम करती थी वहीं से कुछ खाने का इंतजाम करती है, तथा रामलाल को खिलाती है। रामलाल ने साहूकार से कुछ पैसे उधार लिए ताकि खाने-पीने का इंतजाम हो सके | साहूकार ने एक साल की मोहलत पर रामलाल को पैसे दिए। साहूकार ने रामलाल की जमीन अपने पास गिरवी रख ली। तथा रामलाल से कहा कि अगर तय समय के अंदर पैसे नहीं लौटाएँ तो उसकी जमीन पर कब्जा कर लेगा | समय बीतता गया देखते-देखते एक साल बीत गए लेकिन पैसों का इंतजाम रामलाल नहीं कर सका। साहूकार ने उस जमीन पर कब्जा कर लिया | एक गरीब किसान जिसका जीने का एकमात्र सहारा जमीन ही होता है। वह भी रामलाल से छिन गया। रामलाल की व्यथा एक मजबूर गरीब किसान हीं समझ सकता है। गरीबी एक बड़ा अभिशाप है |

अब रामलाल दूसरों के खेतों में मजदूरी करता तथा उसी से दो वक्त का गुजारा चलता | इन सब बातों से मुन्नी तथा रॉनी अभी तक अंजान थे। वे अपनी पढ़ाई मन लगाकर कर रहे थे। देखते-देखते 6 महीने बीत गए। मुन्नी ने CDPO का फार्म भरा तथा उसका चुनाव भी उसमें हो गया। वो बहुत खुश थी। उसके माँ- बाप की मेहनत सार्थक हो गयी। जब मुन्नी गाँव आई तो उसे सब बातों का पता चला। वह साहूकार से अपने खेत को छोड़ने के लिए बोली, साहूकार CDPO के डर से खेत छोड़ देता है। मुन्नी ने 2 महीने की मोहलत लेकर उसके पैसे लौटा दिए। लीला ने जो विश्वास मुन्नी पर पर रखा था, उसे उसने सही साबित कर दिया था। रॉनी का कॉलेज खत्म हो गया तथा वह आगे की पढ़ाई विदेश में करना चाहता था परंतु उसके लिए उसे बहुत पैसे लग रहे थे। मुन्नी ने कहा "चिंता क्यों करता है, मैं हूँ न तुम M.B.A की पढ़ाई विदेश जाकर अच्छे से करो | 2 साल की बात है, मन लगाकर पढ़ाई करना तथा अच्छी नौकरी करना |" रामलाल ने मुन्नी से कहा "बेटी अब तुम शादी कर लो।" मुन्नी ने कहा कि रॉनी की पढ़ाई पूरी होने के बाद ही वह शादी करेगी। उसने कहा कि एक बेटी का फर्ज निभाया, अब एक बहन का फर्ज निभाने दीजिए | लीला ने रामलाल से कहा "लडकियाँ त्याग की मूर्ति होती है, जब तक मायके में है बहन, बेटी का फर्ज निभाती है, ससुराल जाने पर पत्नी, बहू तथा माँ का फर्ज। इसलिए भगवान ने लड़की को ही त्याग की मूर्ति बनाया हैं, मुझे अपनी बेटी पर गर्व है |"

सूरज किशोर
डी.ई.ओ

बचपन सुहाना

वो बचपन भी कितना सुहाना था
नित रोज नया एक बहाना था।
कभी दादा के कंधों पर,
तो कभी दादी के आँचल का ठिकाना था।

कभी पापा की मीठी डांट
तो कभी माँ की शीतल छाया थी।
वो रोते-रोते स्कूल का जाना
और स्कूल न जाने का रोज नया बहाना था।

वो दीदी के साथ बागों में झूला-झूलना
तो कभी पगडंडियों पर गिर कर भी खिलखिलाना था।
कभी नंगे पाँव की वो दौड़
तो कभी पतंग का ना पकड़ पाने का पछतावा था।

वो स्कूल में छुट्टी की घंटी का इंतजार,
तो कभी बिस्तर से न उठने का जमाना था
वो मेरे जिद के आगे पापा का झुकना
तो कभी माँ की हाथों का प्यार भरा थपथपाना था।

अब न वो दिन रहा न वो बचपन का जमाना
शायद बस बचपन की खट्टी-मीठी यादों का ठिकाना है
वो बचपन भी कितना सुहाना था
नित रोज नया एक बहाना था।

संजय कुमार
डी.ई.ओ.

स्टेटस

"क्या बात है दीदी? तब से देख रही हूँ। आप जाने कितनी बार बालकनी में जाकर आई हो। बार-बार दरवाजे की तरफ देखे जा रही हो। आपके कोई रिश्तेदार आने वाले हैं क्या?" -शांता बर्तन माँजते हुए बोली

"अरे नहीं शांता। कोई रिश्तेदार नहीं आने वाले। पर उससे भी कुछ खास चीज आने वाली है" -नैना बोली |

"क्या बात है दीदी? ऐसी क्या खास चीज़ आने वाली है? मुझे भी बताओ" -शांता के बर्तन धोते हुए हाथ रुक गए थे।

नैना- "अरे ! तूने बर्तन धोने क्यों बन्द कर दिये? जल्दी से सब काम कर ले। अभी मुझे शॉपिंग के लिए भी जाना है।"

शांता- "क्या बात है दीदी। आजकल तुम रोज शॉपिंग के लिए जा रही हो। नए पर्दे, तकिये के कवर, नये चादर और तो और तुमने नयी साड़ी भी ली थी न कल। कोई रिश्तेदार की शादी में जाना है क्या दीदी?"

नैना- "नहीं शांता। किसी की शादी में नहीं जाना है। दरअसल बात ये है कि रविवार को हमारी सोसायटी की किटी पार्टी है और इस बार पार्टी मेरे यहाँ होने वाली है तो बस उसी की ये तैयारियाँ है।

शांता- "तब तो दीदी आज भी जो चीजे आने वाली है वो क्या बोलते हैं आप लोग वो किसी किटी पार्टी के लिए ही होगी।"

नैना – "हाँ पागल । वो भी किटी पार्टी के लिए ही मँगवाएँ हैं मैने। "

शांता- "अब बता भी दो दीदी। क्या हैं वो चीज जिसका तुम इतनी बेसब्री से इंतजार कर रही है। मुझसे रहा नहीं जा रहा।"

नैना थोड़ा मुस्कुराते हुए बोली- "मैने नये क्रॉकरीज आर्डर किये हैं।"

शांता – "क्या... क्या कहा दीदी। कोकरी.. काकरी.. क्या होती हैं ये कोकरी.."

नैना हँसते हुए बोली – "कोकरी नहीं पागल

क्रॉकरीज बोलते हैं। क्रॉकरीज मतलब वो चीनी मिट्टी से बने हुए बर्तन।"

"अच्छा वो जैसे मिसेज गुप्ता और मिसेज शाह के घर पर हैं। वही वाले... " शांता बड़ी-बड़ी आँखें करती हुई बोली "बड़े सुन्दर लगते हैं वो दीदी। अच्छा है तुम भी मंगवा लो।"

"मंगवाये तो हैं पर जल्दी से आये तब तो।

पिछले सप्ताह ही आर्डर किये थे मैने और अब तक नहीं आये। उफ! ये ऑनलाइन कंपनी वाले भी ना कोई चीज समय से नहीं पहुंचाते। जरूर ये डेलीवरी बॉय की गलती होगी। वहीं पहुंचाने में देर कर रहा होगा। कंपनी वालों ने तो कब का डिस्पैच कर दिया था।"- नैना परेशान होते हुए बोली।

चिंता मत करो दीदी। आ जाएगा, देखो! लगता है आ गया।" दरवाजे की घंटी सुनकर हुए शांता बोली।

नैना दौड़ते हुए दरवाजे तक पहुंची और सामने पार्सल देख बहुत खुश हुई। जल्दी-जल्दी पेमेन्ट कर उसने दरवाजा बंद किया और पार्सल खोलने लगी।

तब तक शांता भी अपने काम निपटा कर हाथ पोंछते हुए नैना के पास आ बैठी थी। ये नयी क्रॉकरीज का सेट देखकर शांता को उसके घर के बर्तनों की याद आ गयी।

"तुम्हारी पसन्द तो बहुत सुन्दर है दीदी। कितने खूबसूरत बर्तन हैं। सच में ये तो मिसेज गुप्ता के और मिसेज शाह के बर्तनों से भी ज्यादा सुन्दर हैं।"- शांता की आँखों में चमक आ गयीं थी।

"है ना इस बार की किटी पार्टी में मैं भी सबको दिखा दूँगी कि मैं भी किसी से कम थोड़ी हूँ। आखिर हमारे स्टेटस की बात है।"- नैना हँसते हुए बोली।

"पर दीदी! एक बात बताओ इन नये बर्तनों के आने के बाद उन पुराने स्टील के बर्तनों का क्या करोगी?" –शांता बोली।

अब नैना सोच में पड़ गई-"हाँ! ये तो तूने पते की बात पूछी शांता, अच्छा फिर मैं एक काम करती हूँ। कल भंगार वाले की बुला के ये सब पुराने सामान दे देती हूँ। ठीक है।"

"हाँ दीदी! ये किया जा सकता है। बुरा न मानो तो एक बात बोलूँ" - शांता थोड़ा सोचते हुए बोली।

"हाँ बोल ना ! तू कब से मुझसे पूछ कर बातें करने लगी।" नैना ने कहा।

"दीदी। क्या मैं तुम्हारे पुराने बर्तन ले सकती हूँ। वो मेरे घर के कई बर्तन थोड़े टूट-फूट गये हैं। तो अगर तुमको बुरा ना लगे तो ये बर्तन मुझे दे दो ना।" - शांता की आंखों मे आशा चमकने लगी थी।

"अरे हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं? वैसे भी मैं पुराने बर्तनों का क्या करूंगी? तू ही ले जा। अच्छा होगा अगर ये तेरे काम आ जाए।" – नैना बोली –"पर उससे पहले ये पुराने बर्तन बाहर निकालने और नये बर्तन जमाने में मेरी मदद तो कर दे।"

"हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं दीदी? मैं सब फटाफट कर दूँगी" - हमेशा की तरह शांता हंसते हुए बोली।

"अरे वाह माँ ! स्टील के नये बर्तन। तुम्हे इतनी जल्दी बोनस मिल गया क्या माँ? अगर ऐसा था

तो मुझे नये जूते दिला देती। ये देखो मेरे जूते कितने जगह से फट गये हैं। इनको पहन कर चलने में दर्द भी होता है।" - स्कूल से आकर अपना बस्ता पटकते हुए रीना अपनी माँ से शिकायत करने लगी।

शांता ने आज बड़े प्यार से चमकते बर्तनों में खाना बनाया था। बेटी की दुलारते हुए उसे समझाने लगी- "नहीं बेटा ! आज मिसेज वर्मा ने अपने लिए नयी क्रॉकरीज मँगवायी थी। वो क्या कहते हैं कोकरी... चीनी मिट्टी के बर्तन। तो फिर उनको उनके पुराने बर्तनों की जरूरत नहीं पड़ी थी अब तो उन्होंने वो सब मुझे दे दिया। अब देख हमारा रसोईघर भी किसी महल से कम थोड़ी लग रहा है।"

"अरे माँ। कोकरी नहीं क्रॉकरीज कहते है उनको। किताब में पढ़ा था बहुत सुन्दर-सुन्दर डिज़ाइन बनी होती हैं उन पर। खैर छोड़ो माँ। ये तो तुमने बहुत अच्छा किया कि अपने घर पर ये बर्तन ले आयी अब मेरी भी सहेलियाँ कल घर आयेगी तो मैं उन्हें इन गिलासों में पानी पीने को दूँगी। देखना माँ फिर मैं अपनी सहेलियों में सबसे ज्यादा मशहूर हो जाऊँगी। सब सहेलियाँ मेरे ही पीछे-पीछे घूमेगी। आखिर हमारे मोहल्ले में इनसे ज्यादा नये बर्तन तो किसी के घर के नहीं है। मेरा तो स्टेटस बढ़ गया माँ"-चहकते हुए रीना बोली।

"अच्छा माँ ! पर एक बात बताओ। ये नये बर्तनों के मिलने के बाद हमारे जो पुराने बर्तन हैं उनका क्या होगा?" रीना के इस प्रश्न पर शांता भी सोच में पड़ गई और फिर बोली- "हमारे मोहल्ले में जो भंगार वाला है ना। उसके पास जाकर हम पुराने बर्तनों को बेच देते हैं। कुछ पैसे भी मिल जाएंगे। पर रीना किसी और सोच में दूब गयी थी।

"क्या हुआ ? क्या सोच रही है इतना ?" - शांता बोली। "माँ ! मैं सोच रही थी कि मेरे स्कूल जाने के रास्ते में वो जो बड़ा सा नाला पड़ता है ना। देखा है तो तुमने ! वहीं पर जहाँ एक बार तू गिर पड़ी थी और तुझे बहुत चोट आयी थी"-रीना ने कहा। शांता याद करते हुए बोली- "रीना हाँ !" माँ वही नाले के पास एक भिखारन बुढ़िया माँ बैठती है। याद है तुमको माँ। वही पीछे उसकी एक छोटी सी झोपड़ी भी है। माँ तुमको पता है उस दिन जब मैं गिर गयी थी तो उसी ने मुझको उठाया था और मुझे अपनी झोपड़ी में लेकर गयी थी। पानी से मेरे घाव को धो डाला था बहुत मदद की थी उसने मेरी।"- रीना बोली।

रीना- "माँ क्या हम अपने पुराने बर्तन उस बूढ़ी अम्मा की नहीं दे सकते। मैंने देखा था माँ उसके घर में मिट्टी के 2-3 बर्तन थे। अगर हम अपने बर्तन उनको दे दे तो कितना अच्छा होगा। हमारे बर्तन टूटे ही सही पर स्टील के तो हैं। तो बूढी अम्मा बर्तन देख कर खुश हो जाएगी।"

"वाह बेटी ! तूने यह बहुत अच्छी बात कही। हम कल ही अपने पुराने बर्तन उस अम्मा को दे आयेगें। मेरी बिटिया तो मुझसे भी ज्यादा अच्छी और समझदार है जो लोगों के भले के बारे में सोचती है।" – शांता अपनी बिटिया की पीठ थपथपाते हुए बोली।

"बूढ़ी अम्मा उठो देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लायी हुँ ?" रीना चहकते हुए बर्तनों का थैला उसे दिखाने लगी। "अब से तुम मिट्टी के बर्तनों की जगह इनका व्यवहार करना अम्मा"- रीना ने कहा।

"पर बेटी ! ये बर्तन तू कहाँ से लायी।" - बूढ़ी अम्मा की आवाज में खुशी थी।

"वो अम्मा हमारे घर के पुराने बर्तन है। मेरी माँ की मालकिन ने अपने पुराने बर्तन हमलोग को दे दिये अम्मा अब तो उनसे मेरा स्टेटस बढ़ गया है। इसलिये मैं ये बर्तन तुम्हारे लिये ले आयी हूँ। अब से तुम्हारा स्टेटस भी बढ़ गया अम्मा।" – रीना ने कहा।

"ईस्टेटस क्या होता है बिटिया।" - बूढ़ी अम्मा की आँखो में कौतूहल था।

"अरे अम्मा ! तुम इतना भी नहीं जानती। स्टेटस माने प्रतिष्ठा या रुतबा होता है। जब आपके पास आपके पड़ोसियों की तुलना में कोई ज़्यादा अच्छी चीज आपके पास होती है तो उससे आपका स्टेटस यानी रुतबा बढ़ जाता है"- रीना ने कहा।

"अरे बिटिया वाह तुम तो बहुत कुछ जानत हो।"- बोलते हुए बूढ़ी अम्मा के पोपले मुंह पर हँसी छा गयी थी और रीना को ढेर सारा आशीर्वाद दिए

जा रही थी। आखिर बूढ़ी अम्मा का स्टेटस जो बढ़ गया था।

आरती शर्मा
एम० टी० एस०

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ।

पाटलिपुत्र

प्राचीन काल में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। अजातशत्रु की क्रूरता के कारण उसके बुहुत से शत्रु बढ़ गए थे। अतः एक सुरक्षित स्थान को ढूढने के उद्देश्य से उसने गंगा किनारे स्थित पाटलीग्राम नगर को अपनी राजधानी बनाया जिसे उसने पाटलिपुत्र नाम दिया।

माना जाता है कि " पाटलिपुत्र के निर्माण के समय गौतम बुद्ध यहां आए थे और उन्होंने कहा था कि " जल, अग्नि और गृह कलह से यह जगह त्राहिमाम रहेगा। जिसके बाद पाटलिपुत्र के विनाश के पश्चात हमें इन चीजों के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। इस शहर में पहले सोन एवं गंगा नदी के प्रवाह क्षेत्र होने के कारण यहां बंदरगाह था। अतः इसी कारण से यह स्थान पहले पाटलिपुत्र (बिहार) एवं बाद में पटना (बिहार) कहलाया।

अजातशत्रु का शासन करीब 31 वर्ष तक चला एवं उसके राज्य में मगध का चहुओर विकास हुआ एवं परिणाम स्वरुप पाटलिपुत्र (बिहार) दुनिया का सबसे बड़ा शहर बन गया। अजातशत्रु हर्यक वंश का शासक था। हर्यक वंश का शासन अजातशत्रु के बाद लगभग 45 वर्ष और चला। जिसके बाद शिशुनाग वंश एवं उसके करीब 70 वर्ष बाद मगध पर शासन हुआ नंद वंश का। नंदवंश का अंतिम शासक था घनानंद, घनानंद के समय में पाटलिपुत्र दुनिया का सबसे समृद्धशाली शहर हुआ करता था। घनानंद के राज्य में चमड़े से लेकर पत्थर पर भी कर वसूल किया जाता था। उसके राज्य में जनता बहुत ही निराश थी जनता पर बहुत अत्याचार किए जाते थे। उसके काल में जनता त्रस्त थी।

इसी क्रम में तक्षशिला के महान विद्वान विष्णु गुप्त (चाणक्य) जिनका अपमान घनानंद द्वारा किया गया था ने नंद वंश के विनाश की प्रतिज्ञा ली थी। चाणक्य दूरदर्शी एवं महान कूटनीतिज्ञ थे।उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को प्रशिक्षित किया एवं

उचित दिशा दिलाई। जिसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश का अंत कर मौर्य साम्राज्य को पूर्व में अफगानिस्तान, पश्चिम में बंगाल, दक्षिण में कर्नाटक तक विस्तृत कर सम्पूर्ण भारत के सबसे बड़े साम्राज्य की स्थापना की।

इतिहासकारों के अनुसार मौर्य शासन के दौरान ही भारत में प्रथम बार योग्यता के आधार पर पद नियुक्ति की प्रणाली प्रारंभ हुई। मौर्य साम्राज्य में प्रशासन व्यवस्था की जानकारी हमें कोटिल्य के अर्थशास्त्र एवं यूनानी यात्री मेगास्थनीज की इंडिका पुस्तक से प्राप्त होती है।

चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य में मेगास्थनीज दूत बनकर आया था, जिसने अपनी पुस्तक इंडिका में भारत की उस समय की स्थिति का विस्तार से वर्णन किया है वह लिखता है ;- कि उस समय का नगर प्रशासन बहुत ही कार्य कुशल एवम् सुसंगठित था। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो उस काल में जनता अपना जीवन यापन एक अच्छे स्तर पर कर रहे थे।

जब चन्द्रगुप्त मौर्य मगध की गद्दी पर बैठे उसके कुछ समय बाद एलेक्जैंडर अर्थात सिकंदर की मृत्यु हो जाती है, परन्तु उसके सेनापति एवं अन्य जनरल द्वारा भारत के छोटे छोटे क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिया और भारत में ही रह गए। अतः मगध की सीमाओं पर विदेशियों का भय था अतः चन्द्रगुप्त ने धीरे – धीरे इन्हे जीतना शुरू किया जिसमें प्रमुख जीत थी। सेल्युकस के विरुद्ध जिसे हराकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने पर्शिया का विशाल क्षेत्र मगध में शामिल कर लिया।अतः चन्द्रगुप्त मौर्य के अधीन मगध साम्राज्य एक अखंड भारत की विशाल तस्वीर था परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य एवं उनके पुत्र बिन्दुसार की अथक प्रयासों के पश्चात भी कलिंग गणराज्य मगध का हिस्सा नहीं बन पाया था।

बिन्दुसार का पुत्र अशोक, बिन्दुसार के पश्चात मगध की गद्दी पर बैठा। अशोक बुहुत अत्याचारी एवं क्रूर शासक था। इसलिए उसे चंड अशोक के नाम से भी जाना जाता था। अशोक मगध साम्राज्य का विस्तार और अधिक बढ़ाना चाहता था। जिसके परिणाम में उसने अपने शासन के 8वे वर्ष में संपूर्ण शक्ति के साथ कलिंग पर आक्रमण कर दिया ।

मगध की सेना इतनी विशाल थी कि कलिंग की सेना उनके समक्ष ज्यादा समय टिक ही ना सकी। माना जाता है कि, यह युद्ध इतना भयानक था कि इसमें इतना रक्त बहाया गया कि रणभूमि के समीप प्रवाहित होती दया नदी रक्त से लाल हो गई थी जिससे कलिंग राज्य का विनाश हो गया। कलिंग युद्ध के पश्चात एक नए सम्राट अशोक का जन्म हुआ। कलिंग युद्ध के भयानक रक्त-पात के पश्चात अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया एवं इसके पश्चात उसने कभी भी युद्ध नहीं किया एवं अपना अधिक समय मगध के कुशल शासन एवं शिक्षा पर केंद्रित किया ।

अशोक बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गए एवं अहिंसा का संदेश को उन्होंने फैलाया। अशोक ने दीवारों, स्तंभों, शिलाओं पर अपने संदेश का प्रसार

किया। वर्तमान समय में तिरंगे के बीच स्थित अशोक चक्र, सम्राट अशोक की विशेष निशानी के रूप में हमारे बीच उपस्थित है। यह सम्राट अशोक का धर्म चक्र था। जिसकी 12 तीलियां अशिक्षा से दुख एवं अन्य 12 तीलियां दुख से मुक्ति की अवस्था को बतलाती है। वर्तमान में धारण अशोक चिन्ह भी सम्राट अशोक के स्तंभ पर ही सुशोभित था।

बिहार की इसी धरती पर महान खगोलशास्त्री एवम् गणितज्ञ आर्यभट्ट ने जन्म लिया था। जिन्होंने हमें धरती की धुरी, आर्कमडीज से सटीक पाई (π) का मान एवं शून्य (0) की खोज कर मगध को ज्ञान का केंद्र बना दिया था। बिहार में एक से बढ़कर एक महान विद्वान हुए संस्कृत व्याकरण के प्रवर्तक पाणिनि, महाकवि कालिदास, कामसूत्र के रचयिता महर्षि वात्स्यायन सभी इसी भूमि से जुड़े हुए थे।

इतिहास के पन्ने उलटने पर यह हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल का गौरवशाली पाटलिपुत्र मध्यकाल में फीका हो गया था। 12 वीं सदी में मुहम्मद गोरी ने धीरे – धीरे अफगानिस्तान से लेकर दिल्ली तक विजय प्राप्त कर ली एवं उसके सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने खुद को दिल्ली का सुल्तान घोषित कर दिया। जहां पाटलिपुत्र प्रथम साम्राज्य की राजधानी थी। अब उसका विघटन हो रहा था। सत्ता का नया केंद्र अब बदल रहा था। 12 वी सदी के मध्य में ऐबक के सेनापति खिलजी ने बिहार और बंगाल को जीत लिया और अब पाटलिपुत्र दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया गया।

खिलजी ने गुप्त वंश में निर्मित शिक्षा के सबसे बड़े केंद्र के रूप में स्थापित रहे नालंदा विश्विद्यालय का विनाश कर दिया। जिससे मगध साम्राज्य ने सत्ता के केंद्र के साथ – साथ शिक्षा और संस्कृति का केंद्र होने का गौरव भी गवा दिया। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय को सैन्य मुख्यालय बना लिया गया एवं नष्ट किए हुए बौद्ध विहारों को सैन्य निवास के रूप में उपयोग किया जाने लगा एवं इन्हीं विहारों के नाम पर ही बाद में इस सम्पूर्ण क्षेत्र को बिहार नाम से जाना जाने लगा।

मुगल शासन में लगभग 1539 ईसवी में शेरशाह शूरी के शासन में विहार राज्य की ख्याति पुन: बढ़ी। कहा जाता है कि इन्होंने विहार की शेर घाटी में एक शेर को मारा था। जिससे इन्हें फरीद खान से शेरशाह कहा जाने लगा। शेरशाह ने पटना को राजधानी बनाया। जिसे प्राचीनकाल में पाटलिपुत्र के नाम से

जाना जाता था एवं उसने नए सिरे से इसे बसाने की शुरुआत की। सिक्के गढ़ने की शुरुआत भी शेरशाह के शासन काल में ही हुई थी।

उनका सबसे प्रमुख एवं अतुल्य कार्य " ग्रांड ट्रंक रोड " का निर्माण करना जो कलकत्ता से काबुल तक जाती थी। 5 वर्ष के शासन काल के पश्चात ही शेरशाह की मृत्यु हो गई। बाद में औरंगजेब के पश्चात बिहार का महत्व खत्म हो गया और बिहार की सम्पूर्ण पहचान बंगाल में शामिल हो गई। इसके पश्चात उस शहर की पहचान को बनाए रखने वाला कोई सम्राट नहीं हुआ। अतः उस नाम की निरंतरता भी समाप्त हो गई। अंग्रेजों के समय में भी बिहार व्यापार का मुख्य केंद्र बना एवं चंपारण जैसे आंदोलन भी यहां से शुरू हुए परन्तु धीरे – धीरे विहार का गौरव धुंधला होता चला गया।

अभी वर्तमान में पटना का विकास काफी तेजी से हो रहा है। यहाँ चिड़ियाँ घर, जादू घर, वॉटर पार्क, भव्य पुस्तकालय, मंदिर, गुरु गोविंद सिंह से संबन्धित गुरुद्वारा, पार्क आदि होने के कारण यह सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। गंगा नदी के किनारे बसे होने के कारण यहाँ नौका विहार का भी अवसर उत्पन्न हो जाता है। महात्मा गांधी सेतु का भी प्रसार हो रहा है। मेट्रो की सुविधा भी कुछ वर्षों में शुरू होने की संभावना है। आज का पटना शिक्षा का एक बड़ा गढ़ बन गया है। यहाँ कई कॉलेजों का निर्माण हो चुका है जो नाना-प्रकार के क्षेत्रों में शिक्षा पदान कर रहे हैं। प्राचीन काल, मध्य काल तथा वर्तमान काल में पाटलिपुत्र यानि पटना के दृश्य में परिवर्तन देखा गया है। यह परिवर्तन विकास की ओर करवटे ले रहा है। आने वाले भविष्य में भी यह शहर में अनेक परिवर्तन देखा जा सकता है।

सन्नी कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

अजीब दास्तां है ये.....1

हर रोज की तरह मैं सवेरे उठकर बालकनी में जाकर बैठ गया। मुझे मेरी दाहिने बांह में थोड़ा दर्द महसूस हो रहा था और आंखों में अजीब सी जलन भी थी। मैंने अपनी आंख मलते मलते पिताजी को देखा। सामने की कुर्सी पर पिताजी अखबार पढ़ रहे थे।

" कुछ पन्ना मुझे भी दीजिए पढ़ने। " मैंने कहा।

पिताजी ने एक नजर मेरी तरफ देखा फिर संपादकीय पन्ना खुद रखकर बाकी का अखबार मुझे दे दिया। मैंने पढ़ना शुरू किया। थोड़ी देर में भाभी गर्म पानी का लोटा और एक गिलास लेकर आई और मेरे सामने की टेबल पर रख दिया फिर पीछे दरवाजे पर जाकर खड़ी हो गई। मैंने उनपर कोई खास ध्यान नहीं दिया और अखबार की मोटी मोटी शीर्ष पंक्तियों को पढ़ता रहा। भाभी अब भी दरवाजे पर ही खड़ी थी। पिछली रात काफी तेज बारिश हुई थी, मौसम में थोड़ा ठंड-कपन था। सुबह की हल्की धूप अच्छी लग रही थी।

"शायद भाभी भी धूप का आनंद ले रही हो।" मैंने सोचा

मैंने एक नजर उन पर दिया। वह घूरते हुए मुझे ही एकटक देख रही थी। मैंने तुरंत अपनी नजर फिर से अखबार पर टिका लिया और पन्ने पलटने का नाटक करने लगा।

"कल रात की सारी बात आप खुद ही बताएंगे या मैं ही सबको बता दूं?" भाभी ने अपने गुस्से पर नाकामयाब काबू रखते हुए कहा।

"रात गई,बात गई।" मैंने बात टालने के लहजे में उनकी ओर देखते हुए कहा।

तब तक पीछे से मां भी आ गई।

"किस बारे में बात हो रही है?" मां ने पास की कुर्सी पर बैठते हुए पूछा ।

मैं फिर से अखबार पढ़ने लगा।

"इनसे ही पूछिए।" भाभी अपनी आवाज में थोड़ी नरमी लाते हुए बोली।

तभी मेरी नजर स्थानीय खबर के पन्ने पर गई।" एक बाइक वाले ने तेज रफ्तार से एक सब्जी वाली को टक्कर मार दिया, जिसके कारण मौके पर ही उस सब्जी वाली और उसके गोद में 1 वर्ष के बच्चे की मौत हो गई। "

घटना हमारे मोहल्ले की ही थी। नीचे उन दोनों की फोटो भी छपी हुई थी। फोटो देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।

"यह तो वही औरत है जिसे पिछली रात मैंने देखा था। ऐसा कैसे हो सकता है? खबर के अनुसार उसकी मौत तो कल सुबह 8:00 से 9:00 बजे के बीच हो चुकी थी।" सोचते हुए मैंने अपनी नजर ऊपर की।

सब मेरी तरफ ही देख रहे थे। कुछ देर सब कुछ शांत रहा। मैंने गिलास में पानी लेकर दो घूंट पिया। पानी गर्म था इसलिए ज्यादा पिया नहीं गया। 2 मिनट के बाद मैंने रात की घटना सुनानी शुरू की।

"कल रात 9:00 बजे मां, पिताजी और भैया, रमेश चाचा के गृह प्रवेश भोज में चले गए थे। मैं और भाभी घर पर ही थे। हम दोनों खाना खाकर आप लोगों के आने का इंतजार करने लगे। कोई 10 बजे के आसपास बारिश शुरु हो गई।

"यह तो रुकने का नाम ही नहीं ले रही।" भाभी ने लगभग आधे घंटे बाद कहा।

"आप अपने कमरे में जाकर आराम कीजिए, मैं यही सोफे पर बैठ कर इंतजार करता हूं।" सोफे पर पैर पसारते हुए मैंने कहा।

11:00 बज चुके थे, बाहर बारिश और भी तेज हो गई थी। बीच-बीच में बिजली की इतनी तेज आवाज आती मानो पड़ोस में किसी का घर डायनामाइट से उड़ा दिया गया हो।

लगभग 11:15 बजे भाभी आकर कहती है "देखिए ना, बगल वाले कमरे से किसी बच्चे की हंसने-खेलने की आवाज आ रही है।"

"शायद पड़ोसी के बच्चे के आ रही होगी, आपको भ्रम हुआ होगा।" मैंने मुस्कुराते हुए भाभी से कहा।

भाभी ने कुछ नहीं कहा और चुपचाप अपने कमरे में चली गई।

"बाहर तो इतनी तेज बारिश हो रही है कि पड़ोस में कोई चिल्लाए भी तो हमें पता नहीं चले और भाभी को बच्चे की हंसने-खेलने की आवाज आ रही है। अभी वो पेट से है शायद इसलिए कोई ख्याल आया होगा। ऐसे वक्त में यह सामान्य है।" मैंने सोचा।

लेकिन 10 मिनट बाद लगभग दौड़ते हुए भाभी

आई, "मैं कह रही हूं ना, बगल वाले कमरे में कोई बच्चा है। अभी तो मुझे किसी औरत की भी आवाज आई है।"

"आप संभालिए खुद को, चलिए चलकर देखते हैं।" मैंने सोफे से उठते हुए कहा।

मैंने भैया भाभी के कमरे के बगल वाले कमरे को खोला। बिजली थी नहीं तो टॉर्च की रोश्नी से चारों तरफ देखा। कोई नहीं था।

"देखा भाभी, मैंने कहा था ना आपको कोई भ्रम हुआ होगा। देखिए कोई नहीं है कमरे में।" कमरे के दरवाजे को बाहर से बंद करते हुए मैंने कहा।

"शायद सपना हो।" भाभी धीरे से बोली और अपने कमरे में जाने लगी।

मैं भी सामने के कमरे की तरफ जाने लगा तभी पीछे से उसी बंद कमरे से बच्चे की हंसने की आवाज आई। मैं मुड़ा, भाभी भी मुड़ी और हम दोनों ने एक दूसरे के चेहरे पर हवाईया उड़ते हुए देखा। कुछ ही क्षण में हम दोनों संभले। भाभी मेरी ओर ऐसे देख रही थी मानो कह रही हो "देखा मैंने कहा था ना"। मैंने फिर से वह दरवाजा खोला, टॉर्च की रौशनी से चारों कोने को बड़े ध्यान से देखा। अब भी कोई नहीं दिखा। कमरे में शांति थी। बाहर अब भी बारिश हो रही थी।

"चुप हो जा बेटा, ऐसे हंसते नहीं।" किसी औरत की आवाज आई।

भाभी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, "क... क... कौन है?" उन्होंने डरते हुए कहा।

तभी मेरी नजर कमरे के ऊपर रैक पर गई।

"अरे यह रैक तो पुराना सामान रखने के काम आता है। पिछले रविवार को ही तो मैंने सारा सामान भंगार वाले को बेच दिया था और रैक साफ करके उसके दरवाजे पर ताला लगा दिया था। लेकिन अब ताला क्यों नहीं लगा हुआ है? दरवाजा भी हल्का खुला है। और अंदर से यह रोशनी कैसी?" मैंने सोचा।

"देख तूने क्या किया? सबको परेशान कर दिया ना! इतना मारती हूं तुझे फिर भी हंसता ही रहता है। अब तो चुप होकर सो जा!" उसी औरत की फिर आवाज आई।

सुनकर मेरी हालत ही खराब हो गई।

"मुझे खुद को संभालना है। साथ में मेरी भाभी भी है, इनको भी संभालना मेरी ही जिम्मेदारी है। "मैंने सोचा

"हिम्मत रखिए भाभी, मैं देखता हूं।" भाभी से

अपना हाथ छुड़ाते हुए मैंने कहा।

कमरे के एक कोने में एक ऊंचा टेबल रखा हुआ था। भाभी को मैंने टॉर्च दे दिया और खुद उस टेबल को रैक के नीचे लाकर रख दिया, फिर हिम्मत रखकर मैं धीरे-धीरे संभलते हुए उस टेबल पर खड़ा हो गया। दरवाजे के फांक से मैं रोशनी को साफ देख पा रहा था। कुछ दबी दबी आवाज भी आ रही थी। मैंने उसी फांक से अंदर देखने की कोशिश की। मुझे कुछ दिखा नहीं सिवाय एक लालटेन के।

"दरवाजा तो खोलिए।" भाभी हल्के आवाज में बोली।

"हां।"

और जैसे ही मैंने दरवाजे को झटके से खोला, अंदर का दृश्य देखकर मेरा दिल धक्क सा हो गया। मैं टेबल से गिरते गिरते बचा। अंदर एक औरत 40-45 वर्ष की, उजला साड़ी पहनी हुई बैठी है, लाल सिंदूर की एक लंबी रेखा उसके माथे नाक से होते हुए उसके होंठ तक जा रखी है, मुझे देखकर वह मुस्कुरा रही है, उसके बगल में एक टोकरी रखी हुई है जिसमें एक छोटा बच्चा तकिए के सहारे बैठा हुआ है। सामने एक लालटेन रखी हुई है। बच्चा बार-बार उस लालटेन को छूता है और लालटेन की गर्मी से उसका हाथ जल जाता है लेकिन वह रोने के बजाय हंसता जाता है। बच्चे की चेहरे पर हल्का सिंदूर लगा हुआ है।

"इसे आज नींद ही नहीं आ रही, तब से मार रही हूं कि हंसना बंद करें और चुपचाप सो जाए " उस औरत ने काफी विनम्र लहजे में मुस्कुराते हुए मुझसे कहा।

मेरी घिग्घी बंध गई थी। मैंने नीचे भाभी की तरफ देखा, उन्होंने एक हाथ से टॉर्च और दूसरे हाथ से मेरे पैर को बहुत जोर से पकड़ रखा था।

"आप कौन हैं ,और यहां क्या कर रही हैं?" मैंने अपने डर पर काबू रखते हुए उस औरत से पूछा।

"आपकी मां ने मुझे यह कमरा किराए पर दिया है।"

"मेरी मां आपको यह कमरा किराए पर कैसे दे सकती हैं? और यह तो कमरा भी नहीं है यह तो एक रैक है!"

"यह तो आप अपनी मां से पूछिए, मैं झूठ नहीं बोल रही।"

"मां अभी घर पर है नहीं और आप फालतू की बात मत करिए।" मैंने डर और गुस्से की मिश्रित भाव से उससे कहा।

"मैं सच कह रही हूं, आपकी मां ने ही मुझे यह कमरा किराए पर दिया है और देखिए यह किराए का भाड़ा भी दिया।" अपने ब्लाउज से 500 रुपए का नोट निकालते हुए उस औरत ने कहा।

मुझे उसकी बात बड़ी अजीब लग रही थी। पता नहीं क्यों पर अब मेरे मन से डर का भाव निकलता जा रहा था 'या तो यह औरत पागल है या तो हमें पागल बना रही है।'

"मेरी मां ने आपको यह कमरा, मतलब यह रैक आपको किराए पर दिया है " मैंने अपनी एक-एक

शब्द पर जोर डालते हुए उससे पूछा।

"हां, बिल्कुल।"

"मेरी मां ने ही आपको भाड़ा भी दिया?" उसी लहजे में मैंने फिर उससे पूछा।

"जी हां, बिल्कुल।"

अब मैंने गुस्से में कहा "नाटक बंद करो और चुपचाप निकलो मेरे घर से।"

अब तक बारिश बंद हो चुकी थी। वह चुपचाप बैठी रही। 2 मिनट तक हमदोनो एक दूसरे को ऐसे ही घूरते रहे।

मैंने अब चिल्लाते हुए कहा "निकलती हो या मैं आस पड़ोस से सबको बुलाऊं?"

ऐसा कह कर मैं टेबल से कूदा और सीढ़ी के तरफ भागा। बिजली आ चुकी थी। सीढ़ी के नीचे रखी एक मोटी लाठी को उठाया और फिर से कमरे तरफ भागा। वहां पहुंचकर देखता हूं कि भाभी नीचे गिरी हुई है और वह मुझे घर के पीछे के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कह रही है कि वह औरत टोकरी में अपने बच्चे को लेकर उधर उड़ते हुए गई। मैं तुरंत उस ओर भागा। पीछे का दरवाजा खुला हुआ था। मैं बाहर निकलकर पिछली गली से होते हुए घर के सामने वाले दरवाजे पर पहुंच गया। मेरी तेज आवाज सुनकर पड़ोस के कुछ लोग भी बाहर आ गए थे। वह औरत मुझे कहीं नहीं दिखी।

सब लोग पूछने लगे "क्या हुआ? कोई चोर घुस गया था क्या?"

रात काफी हो गई थी सारी बातें बता पाना भी मुझे ठीक नहीं लगा।

"हां, शायद कोई चोर ही होगा।" मैंने उन लोगों को जवाब दिया।

"तभी आप लोग भी रमेश चाचा के यहां से आ गए थे।"

इतना कहकर मैंने अपनी बात समाप्त की।

आशीष कुमार
लेखाकार

मेरी आवाज ही .... पहचान है

6 फरवरी 2022 की सुबह जब यह खबर आई कि महान पार्श्व गायिका लता मंगेशकर अब इस दुनिया में नहीं रहीं तो उनके करोड़ों प्रशंसकों की तरह मैं भी स्तब्ध रह गई। हृदय में वेदना की एक हूक सी उठी। गहरे शोक से आंखें नम हो आई।

लता मंगेशकर जी की अस्वस्थता की खबरें पिछले कुछ दिनों से मीडिया में आ रही थी। उनकी उम्र भी लगभग 92 वर्ष हो आई थी। परंतु मेरा मन उन्हें एक नश्वर मनुष्यमात्र मानने को शायद तैयार नहीं था। न जाने कैसे मेरी धारणा बन गई थी कि लता दीदी भौतिक हाँड़-मांस की प्राणी न होकर कोई अलौकिक देवी हैं। उनकी आवाज की तरह ही अविनाशी और शाश्वत, जिस पर भौतिक संसार का कोई नियम लागू नहीं हो सकता। ऐसे में लता दीदी के निधन का समाचार एक ऐसा निष्ठुर सत्य है जिससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता साथ ही जिसे स्वीकार कर पाना भी अत्यंत कठिन है।

मुझे संगीत में गहरी रूचि रही है। बचपन से ही लता दीदी के गाने सुन-सुनकर गाने का अभ्यास किया। मैंने शास्त्रीय संगीत की थोड़ी-बहुत शिक्षा ली है। स्वर के उतार-चढ़ाव, लय के आरोह-अवरोह में लता जी द्वारा गाया गाना ही मेरा आदर्श मानदंड रहा है। इस प्रकार मैं लता जी की प्रशंसक मात्र नहीं बल्कि लाखों संगीत प्रेमियों की तरह मैं स्वयं को उनकी मानस शिष्या भी मानती हूँ। लता दीदी के ऐसे न जाने कितने गीत हैं जिसे टेपरिकॉर्डर पर प्ले कर मैं उनका अनुसरण करते हुए उनके साथ गाने का अभ्यास करती थी। कभी-कभी मैं जब बेसुरा होती थी तो जल्दी से टेप को पॉज कर देती थी। गाना रिप्ले कर पुनः गाने का अभ्यास करती तो मुझे आभास होता मानों लता दीदी मुझे डांटते हुए दुबारा ठीक

से गाने की नसीहत दे रही हो।

जब टेप रिकॉर्डर पर प्ले कर उनके साथ कदमताल करते-करते गाना पूरा करती थी तो एकबारगी लगता था कि मैं अलौकिक रूप से उनके निकट हूँ। ऐसे भावनात्मक अनुभवों को शब्दों में प्रकट करना कठिन है।

मानव जीवन में कई तरह की परिस्थितियाँ आती हैं। जीवन में कई तरह के रंग होते हैं। विभिन्न स्थितियों में उपजे अलग-अलग मनोभाव एवं अनुभूतियों को कोई कवि कविता के रूप में लिखता है, तो कोई गीतकार उसे गीत द्वारा प्रकट करता है। मानव जीवन का ऐसा कोई भाव या ऐसी कोई स्थिति हो नहीं सकती जिसे लता दीदी का गाना स्पर्श न किया हो। हर मूड तथा हर परिस्थिति में उनके द्वारा गाया कोई न कोई गीत फिट बैठता है। यह गाने केवल मनोरंजन के निमित्त नहीं हैं। ये दुख में संबल देते हैं, उदासी में सहारा बनते हैं, संघर्ष में मजबूती देते हैं और खुशी में हृदय सहलाते हैं।

वैसे तो लता दीदी ने कई भाषाओं में करीब 30,000 से अधिक गाने गाए हैं। परंतु उनके द्वारा गाए गए हिंदी और बांग्ला गीतों का आस्वादन ही मैंने किया है। बांग्ला में गाए उनके कई गीत बांग्ला संगीत जगत के मील के पत्थर साबित हुए हैं।

क्या कोई खुदीराम बोस की फाँसी की सजा पर आधारित जनप्रिय बांग्ला गीत 'एक बार बिदाई दे मा घुरे आशी' को सुनकर मर्माहत हुए बिना कौन रह सकता है!

बांग्ला गीतों में लता दीदी द्वारा किए बांग्ला शब्दों का उच्चारण किसी स्थानीय बंगाली से भी बेहतर है। निःसंदेह अन्य भाषाओं में गाए उनके गीत भी श्रेष्ठ एवं अनन्य होंगे।

लता दीदी की सादगी उनके व्यक्तित्व को अधिक गरिमा प्रदान करती है। सफेद साड़ी पहनी, माथे पर गोल बिंदी लगाए ,भड़कीले रंगत से दूर उनके चेहरे पर ऐसी निष्पाप, बाल सुलभ सौम्यता थी जिसका हर व्यक्ति कायल हो जाता था। उनके व्यक्तित्व में ऐसा मिथकीय जादू था कि वह कई पीढ़ियों के बीच किंवदंती बन गई थी।

मुझे स्मरण है कि मेरी नानी अक्सर कहा करती

थी लता मंगेशकर की मृत्यु के पश्चात विदेशी वैज्ञानिक उनके गले पर शोध कर पता करेंगे कि वह आखिर इतनी सुरीली क्यों है? ऐसी किंवदंतियाँ एवं मिथक यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त हैं कि साधारण लोगों में लता दीदी के उत्कृष्ट गायन की चरम स्वीकृति है।

लता दीदी की आवाज में निर्विवाद रूप से जमाने भर की मिठास है। उनकी आवाज में वह चुंबकीय शक्ति है जिससे हर उम्र का व्यक्ति, लिंग, धर्म, व्यवसाय के व्यावधान को भूलकर उनकी ओर खिंचा चला जाता है। तभी तो उनके प्रशंसकों की फेहरिस्त में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, दिग्गज क्रिकेटर आदि शामिल हैं साथ ही रेहरी पटरी पर सामान बेचने वाले वेंडर, मजदूर और साधारण कामगार भी।

लता दीदी का जीवन संघर्ष, लगन, परिश्रम और धैर्य की महागाथा है। उनके जीवन में वे सभी प्रेरक तत्व विद्यमान है, जिनसे हम सदा सीख सकते हैं, हौसला पा सकते हैं और विजयी हो सकते हैं।

उनकी आवाज में जितनी मिठास थी उनका बचपन उसी मात्रा में कड़वे अनुभव से भरा था। उनके पिता शास्त्रीय गायक थे। उनकी आय सीमित थी और परिवार बड़ा था। पिता की असमय मृत्यु के बाद सभी भाई-बहनों की जिम्मेदारी लता दीदी के कंधों पर आन पड़ी। ऐसी परिस्थिति में साधारण व्यक्ति टूट सा जाता है। पर लता दीदी साधारण कहाँ थी? महज 13 वर्ष की आयु से ही वह अपनी कला से धन कमाकर परिवार का भरण पोषण करने लगी थीं। लता दीदी की विधिवत स्कूली शिक्षा नहीं हो सकी। पर छोटी उम्र में ही उन्होंने जीवन की मुसीबतों, संघर्षों और जिम्मेदारियों से ऐसा पाठ सीखा जो किसी भी विश्वविद्यालय के किताबी ज्ञान से अधिक प्रभावी था।

भारतीय संगीत जगत में उन्होंने लंबा सफर तय किया है। इस लंबे सफर में उन्होंने कई हस्तियों

के साथ काम किया है। कुछ उनके मित्र बने, कुछ आलोचक बने, परंतु लता दीदी ने कभी अपने मूल्यों के साथ समझौता नहीं किया। अपने मूल्यों पर वह बेहद शालीन परंतु दृढ़ हो कर अड़ी रही। यह उनके व्यक्तित्व की गरिमा एवं उनके शिल्प कौशल की विराटता ही थी कि समय के साथ उनके आलोचक भी उनके मुरीद बन जाते थे।

लता दीदी की आवाज स्वच्छ, शीतल एवं पवित्र जल की भांति है। शुद्ध जल जैसे शरीर को पवित्र करता है, उसी तरह उनके गाने हृदय को पवित्र करते हैं। हृदय की तृष्णा को बुझाते हैं, उसे तृप्त एवं निर्मल करते हैं। सिनेमा उद्योग ने इस पहलू को जल्द ही भाँप लिया था। अतः सिनेमा की वे नायिकाएँ जो अत्यंत सुशील,मासूम और उदात्त भावनाओं से भरी होती थीं, उन्हें कंठस्वर लता दीदी ने प्रदान किया। दूसरी ओर शोख़, चंचल तथा उत्तेजक हाव-भाव की नायिकाओं को अन्य गायिकाओं का कंठ स्वर मिला।

याद आता है 'मुग़ल-ए-आज़म' का वह दृश्य जिसमें सलीम बने दिलीप कुमार के समक्ष सीधी-सादी अनारकली यानी मधुबाला का संगीत मुकाबला बेहद चालाक एवं कुटिल प्रतिद्वंदी से हो रहा है। कोमल और शांत चरित्र की नायिका मधुबाला को स्वर दिया है लता मंगेशकर ने और चालाक प्रतिद्वंदी को स्वर शमशाद बेगम ने दिया है। मानो लता दीदी की आवाज ही शुचिता का प्रतीक हो।

लता दीदी के कुछ गानों का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है। परंतु ऐसा मैं नहीं कर सकती, मेरे समक्ष चुनौती यह होगी कि उनके किन गानों का उल्लेख न करूँ।

लता दीदी के बारे में किसी लेख में सब कुछ लिखना संभव नहीं है। किसी शोधपरक पुस्तक में भी क्या सभी कुछ समाहित किया जा सकता है? कुछ न कुछ अवश्य छूट जाएगा। वे हिमालय पर्वत सी हैं जिसे किसी बिंदु पर खड़े होकर पूर्णतः नहीं देखा जा सकता। यह लेख लता दीदी के करोड़ो प्रशंसकों में मुझ एक के द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास मात्र है।

उनकी विराटता के समक्ष अभिव्यक्ति सीमित है। भारतीय संगीत और सिनेमा सदैव उनका ऋणी रहेगा। कला के क्षेत्र में उनके योगदान तथा सामाजिक जीवन में उनकी उपस्थिति हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

बयान-ए-इश्क़

कभी-कभी जब मैं अपनी पिछली यानी कि बीती जिंदगी की तरफ झांकता हूं तो मुझे अपने कुछ फैसलों पर पछतावा सा होने लगता है कि आखिर मैं उस वक्त ऐसा क्यों नहीं कर सका। यदि मैंने उस समय इसके बजाय दूसरा विकल्प चुन लिया होता तो जिंदगी शायद किसी और मुकाम पर होती शायद मैं अपने जीवन में अब की अपेक्षा कहीं ज्यादा खुश होता । आज की यह यातनाएं मुझे ना झेलनी पड़ती, शायद मैं किसी खास से ना बिछड़ा होता मगर दूसरे ही पल मस्तिष्क में एक और विचार कौंध जाता है जो कि बचपन से ही हम अपने आसपास के लोगों से सुनते रहते हैं वह यह कि किसी भी मनुष्य के जीवन में अच्छा या बुरा जो कुछ भी घटित होता है वह सब उसी सर्वशक्तिमान की इच्छा से एवं इंसान के भले के लिए ही होता है।

उदाहरण के तौर पर मैं यहां एक कहानी का जिक्र करना चाहूंगा । यह कहानी मेरे एक परम मित्र की जिंदगी से जुड़ी हुई है। बात तब की है जब विनय 20 की उम्र का था । आप सब तो जानते ही होंगे कि उम्र का यह पड़ाव भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उम्र के इसी पड़ाव पर सूझबूझ के साथ लिया गया एक सही निर्णय आपके भावी जीवन को सुखमय एवं एक गलत फैसला जिंदगी को दुख के सागर में डूबा देने के लिए पर्याप्त होता है । इस वक्त हम ग्रेजुएशन पास हो चुके थे और अपनी अपनी आगे की जिंदगी की

परिकल्पना तैयार कर ही रहे थे कि अचानक विनय की मुलाकात फेसबुक पर आरती नामक एक युवती से हो जाती है। उनका यह सफर शुरुआती हाय हेलो से शुरू होते होते चैटिंग कर एक दूसरे के बारे में अधिक से अधिक जानने को आतुर रहने तक पहुंच जाती है। आरती थोड़ी केयरिंग और डेयरिंग नेचर वाली युवती थी जिसे हमेशा अपने मित्र का ख्याल रहता था और विनय उसके इस स्वभाव से अधिक प्रभावित था । समय अपनी गति से अग्रसर होता रहा उसी बीच आरती का तो पता नहीं पर विनय के मन में उसके प्रति कुछ खास फीलिंग धीरे धीरे उमड़ने लगा था। उसे लगने लगा कि उसे आरती से इश्क हो गया मगर उस इश्क का इजहार आरती से करने में वह हिचक भी रहा था कि कहीं वह बुरा मान कर छोड़ कर चली ना जाए। इसी डर ने विनय को इजहार करने से रोके रखा था एवं उसे एक दोस्त ही बनाए रखा। धीरे-धीरे समय व्यतीत होते गया अचानक कुछ दिनों के बाद दोनों में किसी बात पर आपसी विवाद हो गया। इसी दौरान अचानक विनय आरती से अपने इश्क का इजहार कर बैठता है। आरती सुनकर बिल्कुल हतप्रभ सी रह गई पर विनय एवं आरती दोनों के ही मन में एक दूसरे के प्रति यही भावना उमड़ रही थी।

लेकिन इंतजार था तो केवल पहल करने का। आरती की आंखों में अपने प्यार का इजहार की खुशी के आंसू छलक पड़े। और वह एकाएक बोल उठी " बुद्धू तुमने मुझसे पहले क्यों नहीं बताया कि तुमको भी मुझसे प्यार है । कायर कहीं के इतनी देर लगाना अच्छी बात है क्या?" विनय कहता है " मुझे डर लगता था कि कहीं यह सब सुनकर तुम मुझे गलत समझ कर मुझसे दूर ना चली जाओ । आरती अब तुम ही मेरी जिंदगी हो और मैं अब तुम्हें किसी भी कीमत पर खोना नहीं

चाहता।" रास्ता बिल्कुल साफ हो चुका था दोनों के दिल के दरवाजे एक दूसरे के लिए खुल चुके थे। उसी क्षण उन दोनों ने साथ जीने मरने की कसमें खाई। क्योंकि विनय अब अच्छी खासी नौकरी भी करता था तथा आरती का ही बिरादरी का था। दूसरे ही दिन विनय आरती के घर पहुंच कर उसके मम्मी पापा को इस रिश्ते के लिए मान मनुहार करने लगा अंततः आरती के मम्मी पापा भी विनय के घर पहुंचकर विनय के मम्मी पापा को काफी मान मनौवल के बाद इस रिश्ते हेतु तैयार किया।

कुछ ही दिनों पश्चात बड़े धूमधाम से उन दोनों का पाणि-ग्रहण संस्कार भी हो गया और वह दोनों अपने इकलौते पुत्र के साथ सुखी दांपत्य जीवन का आनंद लेते हुए अपनी सफर की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं।

आनंद कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

शहर में घर

पापा आप ने दिखाया था सपना
शहर में बहुत बड़ा है घर अपना।
सच यह डब्बा ही पाता संज्ञा घर का
लगता रैनबसेरा यह किसी दिवाचर का।

सुविधा के साधन भरे पड़े
और जीवंतता का घोर अभाव
बिल्कुल लगता कारागार सा
सर्वत्र अकेलापन का भाव
क्या चेतन का भाव कहीं है?
नहीं बेटा ऐसा नहीं है।

डाइनिंग हॉल में आंगन वाली बात कहां?
हर शाम सजती सितारों की बारात कहां?
ना कोने में कुआं, कल
न ही तुलसी का परिमल।
कहां टंगी है सावे डोरी
ना भूसे से भरी जूट की बोरी।
किस पर वसन सुखाऊँ मैं?
कहां विहग को बुलाऊं मैं?
चढ़ किस पर धूम मचाऊं मैं?
कहां उन्मुक्त दौड़ लगाऊं मैं?
या चुपचाप सोफे पर सो जाऊं मैं
क्या जीवन का एहसास कहीं है?
ना बेटा ऐसा नहीं है।

शहर में हर घर की छत नहीं होती
अतः लोग बालकनी बनवाते हैं।
एक छोटा सा कोना पाकर
मन मतंग को कहलाते हैं।
शहरों में नहीं मचलती रजनी,
बालकनी में नहीं ठहरती चांदनी,
नहीं जहां बरसात की मस्ती,
चलती भी नहीं कागज की कश्ती।

गुड्डी को सैर कराऊं कैसे?
कैसे चंदा मामा को पुए खिलाऊं मैं?
कनछेदन के घाव को कैसे

बिन शबनम के सहलाऊं मैं?
आकांक्षाएं फैली घर सिमटा
खुद को कितना समझाऊं मैं ?
क्या रौनक का आभास कहीं है?
नहीं बेटा ऐसा नहीं है।

ईटों से बस बनता मकान,
रहने वालों से रचता है घर।
सभी जन गर सप्रेम रहे,
तृणकुटि भी कहलाता घर,
घर संज्ञा नहीं ईटों के परकोटे का
विशेषण यह बाशिंदों के जज़्बात का
सुविधा के साधन ना हो भले
पर विकीर्ण हो सुवास हयात का
घर रकवे से बड़ा नहीं होता
ना गारे से जुड़ा होता है
जब संपूर्ण परिवार संयुक्त रहें
तभी घर बड़ा होता है।
तब तो प्रेम सदन भी घर नहीं
जहां अलग-अलग सब चाचा जी।
हर कमरे में लटकते ताले
बरामदे में तन्हा सोते दादाजी।
मर्त्यलोक की अशांति यहां
है कोलाहलपूर्ण शहर।
चलो लौटकर गांव चले
और मिलकर बसाएँ घर।
पापा जीवन में अमन नहीं है।
हां बेटा हमारा घर नहीं है।

अंकित कुमार झा
एम.टी.एस

सुनीता का संसार

सन 1965 मधुपुर नाम का एक गांव था। यह हमारी मातृभूमि पश्चिम बंगाल के पश्चिमी छोर पर बसा है। सुनीता इस गांव में अपने माता पिता के साथ रहती थी। उसकी उम्र लगभग 10 वर्ष थी। उसका एक भाई भी था जिसका नाम कमल था। रोज सुबह होते ही इनके पिताजी खेतों में काम करने के लिए चले जाते थे। और दोपहर होते ही उसकी मां खाना लेकर खेत में जाती थी और साथ में कमल भी जाता था।

सुनीता के पास एक बछड़ा भी था जिसे वह रोज चारा खिलाने खेत में ले जाती थी। इन बच्चों के पिता जी बड़े ही कठोर परिश्रम करते थे। खेत में हल चलाने के पश्चात अपने ही घर के पास तालाब में मछलियां पकड़ने के लिए जाते थे और मां अपने ही खेत में उगे हुए चावल दाल और सब्जी से इन सबके लिए खाना पकाती थी। सुनीता भी अपनी मां का हाथ बँटाती थी। सभी खुशी से जीवन बिता रहे थे। इनका घर भी बहुत साधारण था। दिन रात मेहनत करते हुए भी इन सबके मन में बहुत ही शांति थी। उन्हें ना कोई ज्यादा धन का लालच था ना कोई धन गँवाने का भय था।

एक दिन सुनीता जब अपने बछड़े को लेकर चारा खिलाने खेत में ले गई तो देखी कि दूर कुछ बच्चे झूला झूल रहे थे। उसका भी मन हुआ कि वह झूला झूले। फिर वह उन बच्चों के साथ झूला झूलने लगी। इधर सुनीता का प्यारा सा वह बछड़ा चारा खाते-खाते जमीन के किनारे एक छोटे से गड्ढे में गिर पड़ा। बछड़ा बहुत चिल्ला रहा था। काफी देर के बाद सुनीता को उसकी आवाज सुनाई पड़ी और दौड़ कर वह उसे उठाई। फिर बछड़े को खूब प्यार करने लगी।

एक दिन सुनीता अपने भाई को लेकर अपने ही घर के पास खेलने लगी अचानक ट्रेन की आवाज सुनाई दी। ट्रेन की आवाज सुनकर दोनों में एक

अजीब सी स्फूर्ति आ जाती थी। दोनों ट्रेनों को जाते हुए देखने लगते थे। सुनीता और कमल गांव के मास्टर रवि बाबू की पाठशाला में पढ़ने जाते थे। वह पाठशाला आम के पेड़ के नीचे था। यहां पर बहुत सारे बच्चे पढ़ने के लिए आते थे। मास्टरजी पढ़ाते पढ़ाते नींद लेने लग जाते थे तब बच्चे आपस में शरारत करने लगते थे। फिर उनके शोर से मास्टरजी की नींद खुलती थी और वह बच्चों को जोर-जोर से डांटने लगते थे। लेकिन फिर भी बच्चे उस मास्टर जी से नाराज नहीं होते थे।

इसी तरह सुनीता और कमल दोनों बच्चे अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी दिन गुजार रहे थे। अचानक कुछ महीने बाद उनकी मां बीमार पड़ी और चल बसी। मां के गुजरने के बाद सुनीता घर का सारा काम करने लगी। अचानक ही कुछ ही दिनों में मानों सुनीता एक बड़ी लड़की बन गई हो। अपने पिता एवं भाई की देखभाल करने लगी। भाई को कभी मां की कमी महसूस नहीं होने दी।

लिपिका दास
सहायक लेखा अधिकारी

कोरोना के लाभ

जी, विषय देख कर चौंके नहीं। लगता तो यही है कि कोरोना और लाभ – ये दोनों एक साथ नहीं जा सकते, लेकिन ऐसा नहीं है – यह सत्य है और सत्य तो कड़वा ही होता है। करीबन ढाई सालों से यह पूरी दुनिया कोरोना के दंश को झेल रही है। दुर्भाग्य से यह वह सूत्र निकला जिसने पूरब और पश्चिम के अंतर को भी पाट दिया। इसकी चपेट में आने से न तो विकसित देश खुद को बचा पाये न विकासशील देश। बल्कि, विकसित देशों ने इतिहास की इस ऐतिहासिक त्रासदी की भयावह तस्वीर को ज़्यादा करीब से देखा। खैर, हमारा विषय इन सबसे थोड़ा हट कर है।

कहा जाता है कि हर विध्वंस के बाद या उसके होने के क्रम में कुछ न कुछ सृष्टि भी होती रहती है। कुछ ऐसा ही भारत में हुआ। जनवरी 30, 2020 को भारत में कोरोना संक्रमण का पहला केस सामने आया। फिर संक्रमण ने रफ्तार पकड़ी और देश में केस तेजी से बढ़ने लगे। इसे देखते हुए 24 मार्च, 2020 को पूरे देश में राष्ट्रीय लाकडाउन की घोषणा हुई। ' लाकडाउन ' – यह शब्द अपने आप में किसी अघोषित युद्ध से कम न था। अभी लोग इस कोरोना को समझने की कोशिश कर रहे थे तब तक इस लाकडाउन के चक्रव्यूह में उलझ गए। आगे भी कोरोना की बढ़ती रफ्तार को रोकने के लिए कई चरणबद्ध लाकडाउन और अनलॉक की प्रक्रिया चलती रही।

इस लाकडाउन और अनलॉक के बीच के बनते - बिगड़ते संतुलन ने एक अद्वितीय कार्य किया। सदियों से दोहित होनेवाली इस पृथ्वी ने स्वयं को अपेक्षाकृत परिष्कृत करने का एक अवसर पाया। विगत सदी में मनुष्य ने प्रगति के कुछ अन-छूए शिखर छूते हुए इतिहास रचने का प्रयास किया। देखा जाये तो वह सफल भी हुआ लेकिन इस सफलता की कीमत हमारी पृथ्वी और

प्रकृति ने चुकाई। इन दोनों के शोषण और दोहन के भी नए आयाम छूए गए। लेकिन इस लाकडाउन ने इस शोषण और दोहन की अनवरत चलती गति को थोड़ा अवरुद्ध अवश्य किया। इस अवधि के दौरान नदियों, पहाड़ों को साथ – साथ हवा की गुणवत्ता में धीरे ही सही पर सुधार नज़र आने लगा। लुप्तप्राय होने की कगार पर पहुंची नदियों को दूसरा जीवन मिला। यमुना जो हमारे देश की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है, के जल गुणवत्ता मानक (पीएच, डीओ, बीओडी, सीओडी आदि) में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। जिन नदियों ने सदियों से हमारी मनुष्य जाति को जीवन दान दिया उन्हें स्वयं एक नई जीवन धारा मिली।

सिर्फ जल के स्रोत ही नहीं, बल्कि हवा की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार द्रष्टव्य हुआ। हमारा देश प्रदूषण के मामले में विश्व में तीसरे स्थान पर है। जल, ध्वनि, वायु, भूमि के अतिरिक्त जितने भी अन्य प्रकार के प्रदूषण हैं, उनमें लाकडाउन के पहले और उसके बाद अंतर पाया गया। लाकडाउन के कारण वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोतों जैसे वाहन, पावर प्लांट, औद्ध्योगिक इकाइयों की गतिविधियों में अचानक एक विराम लगा। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हवा की गुणवत्ता पर दिखा। देश की राजधानी दिल्ली, जो प्रदूषण की रेस में भी राजधानी बन चुकी थी, उसके एक्यूआई (AQI) स्तर में आश्चर्यजनक परिवर्तन दिखा। 1 अप्रैल, 2020 से 31 मई, 2020 के बीच दिल्ली में प्रदूषण के विभिन्न पैरामीटरों जैसे pm 2.5, NO2, NH3, SO2 और CO आदि में गिरावट देखी गई। एक शोध से उजागर हुआ कि इस दौरान दिल्ली की हवा में pm 2.5 में 48% की गिरावट दर्ज़ की गई है। लाकडाउन के दौरान एक समय हवा इतनी स्वच्छ हो गयी कि उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से ही 636 कि. मी. दूर बर्फ से ढंके हिमालय के दर्शन लोगों ने किए। तकरीबन तीन दशकों के बाद पंजाब के जालंधर से भी लोगों ने अपने घरों की छतों से बर्फ से आच्छादित हिमालय देखा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड के डेटा अनुसार उस अवधि के दौरान देश के 85 शहरों की वायु गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार हुआ। लाकडाउन के प्रथम तीन दिनों में एक्यूआई (AQI) का स्तर 75 तक आ चुका था। इस दौरान रास्तों पर गाडियाँ भी बहुत कम दिखती। ध्वनि प्रदूषण से भी इस कारण थोड़ी राहत मिली। कोलकाता में वायु और ध्वनि प्रदूषण दोनों ही कम हुए। पश्चिम बंगाल प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड के डेटा अनुसार इन दोनों में इस दौरान 50% से 75% की कमी पायी गई। गाड़ियों के हॉर्न से निकलने वाले शोर की जगह पक्षियों की चचहाहट ने ले ली।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात मानव- इतिहास में शायद लाकडाउन ने ही एक ऐसी स्थिति पैदा की, जिसमे मनुष्य घर के अंदर कैद था और पशु- पक्षी

उन्मुक्त होकर रास्तों पर विचरण का रहे थे। उत्तर प्रदेश के नोएडा शहर के ग्रेट प्लेस मॉल के समीप के रास्तों पर जहां सिर्फ ट्रेफिक का शोर होता था, वहाँ अचानक एक दिन नीलगाय को टहलते देखा गया। धार्मिक स्थल भी इस लाकडाउन में बंद रहें। तिरुमाला तिरुपति की सड़कें जो भक्तों की भीड़ से पटी रहती थी, उन्हीं रास्तों पर हिरण और सांभर को देखा गया। यहाँ तक कि मुंबई, जिसे कभी न सोने वाला शहर माना जाता है वहाँ भी तारदेव में खारेघाट पारसी कॉलोनी में दर्जनों की संख्या में स्थानीय लोगों ने सुनसान पड़े रास्तों पर मोरों को नाचते देखा।

यह अनुमान लगाया गया कि इतनी अधिक संख्या में मोर पास ही के डूंगरवाड़ी जंगल से आए थे। मरीन ड्राइव और मालाबार हिल्स के निकट डालफ़िन्स को देखा गया। मानव गतिविधियों में होने वाली व्यापक कमी को इसका कारण बताया गया। गुवाहाटी शहर के पूरब में स्थित सोनपुर में एक सिंह वाले गेंडे को उन्मुक्त रास्तों पर घूमते देखा गया। इसी के आस- पास लोगों ने दुर्लभ काली लोमड़ी की आवाज़ को भी सुनने का दावा किया।

लाकडाउन के दौरान लगी पाबंदियों ने जहां मनुष्य के धैर्य की परीक्षा ली, वहीं सदियों से सरलता से वंचित हमारे जीवन को एक हल्का ठहराव मिला। रोज़ की भागदौड़ और उसके साथ जीवन की रेस ने हमे एक मशीन जैसा बना दिया था। परिवार का सुख, अपनों के साथ समय बीताना – इन सबसे हम दिन –ब- दिन दूर होते जा रहे थे। इस लाकडाउन ने हम सभी को लगभग इतना समय अवश्य दिया, जिसमे हम अपनों के साथ इस मशीनी जीवन को कुछ समय के लिए रोक सके। एक साथ मिलकर खाना बनाना, खाना – खाना, मिल- जुलकर घर गृहस्थी का काम करने का भरपूर समय मिला। हमारे रोज़ की भाग - दौड़ को अचानक एक अल्प विराम सा मिला। लगभग सभी ने इस समय का लाभ भी उठाया और अनछूए से पड़े अपनी – अपनी रुचियों को वापस से पहचानने का प्रयास किया। बाहर खाने के आदि हो चुके लोगों ने घर पर खाना बनाना शुरू किया तो लगा कि कहीं न कहीं घर पर रेस्टोरेंट जैसा खाना थोड़ी मेहनत से बनाया जा सकता है। डायरी लिखना भी शुरू

किया गया तो, कहीं अपनी भावनाओं को रंगों के माध्यम से उकेरा गया। घर की सुनी पड़ी बालकनी और खाली और उजाड़ पड़े छत को बागवानी से सजाया गया। लोगों ने स्वास्थ पर ध्यान देना शुरू किया। कोरोना को अच्छी इम्यूनिटी से ही मात दिया जा सकता था और इस इम्यूनिटी को बढ़ाने के लिए कई घरेलू नुस्खे अपनाए जाने लगे। भागते – भागते हम अच्छे से सोना भूल चुके थे। आधी- अधूरी नींद कई बीमारियों की जड़ होती है लेकिन इस लाकडाउन ने हमे ढंग से सोने का अवसर दिया। जिम में घंटों जाकर वर्जिश करने वाले अब घर पर सेहत बनाने लगे। यह लाकडाउन शायद उन कामकाजी महिलाओं के लिए वरदान ही सिद्ध हुआ जो उस अवधि के आस – पास माँ बनी थी। उन्हे अपने नवजात शिशु के साथ भरपूर समय मिला।

कोरोना ने नि: संदेह पूरे विश्व को झकझोड़ कर रख दिया। जीवन का हर कोना इससे प्रभावित रहा, लेकिन जैसा कि हरिवंश राय बच्चन ने कहा था – "है अंधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।" जीवन न रुकता है और न रुकेगा। हम सबको इस कोरोना के अच्छे - बुरे पहलुओं के साथ जीना होगा और आगे बढ़ते रहना होगा।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

सच्ची घटनाएँ

मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी भी कुत्ता पाला नहीं है क्योंकि मुझे बिल्ली, कुत्ते आदि जैसे पालतू जानवरों का देखभाल करना पसंद नहीं है। इसका यह मतलब नहीं है कि मुझे इन जानवरों से नफरत है। मैं इन पालतू जानवरों से खुद को दूर इसलिए रखता हूँ क्योंकि मुझे इन जानवरों से उस हद तक लगाव नहीं है कि इन्हें पाल सकूँ। मुझे बिल्ली, कुत्ता आदि जैसे पालतुओं के प्रकृति के बारे में बहुत अनुभव है जो मेरे घर तथा इलाके के आस पास घूमते रहते हैं। इन अनुभवों से संबन्धित बहुत सारी घटनाएँ हैं जो मेरे हृदय को छूआ है तथा मेरे मानस पटल पर भी अमिट छाप छोड़ा है जिसे मैं अपने जीवन में कभी भूल नहीं पाऊँगा।

मैं अब आपके समक्ष कुछ सच्ची घटनाओं को अभिव्यक्त करूंगा।

पहली घटना :- मैं अपने नए घर में वर्ष 2006 में शिफ्ट हुआ था जो कि मेरे पुराने घर से लगभग 7 किलोमीटर की दूरी पर था। मैं अपने नए मकान में रहने लगा जहां जीवनयापन के लिए आवश्यक वस्तुएं मौजूद थी जैसे नए पड़ोसी, दुकान, बाजार, पोस्ट ऑफिस, रेलवे स्टेशन, पंचायत ऑफिस इत्यादि। मैं इन सारी आवश्यक वस्तुओं को पाकर बिलकुल भी दुखी नहीं था। नए जगह पर जीवन ठीक-ठाक ही चल रहा था। नए स्टेशन से ट्रेन पकड़ कर ऑफिस पहुँचने के लिए मैं सुबह ही घर से निकल जाया करता था। तथा अपना कार्य पूरा करने के पश्चात मैं अपने घर आया करता था। घर पहुँचने की यात्रा के दौरान, मैं पहले ट्रेन पकड़ता था तथा रेलवे स्टेशन से घर का सफर मैं साइकल के द्वारा किया करता था। मुझे रेलवे स्टेशन से जी.टी. रोड जाने में 5 मिनट लगता था तथा जी.टी. रोड से घर पहुँचने के क्रम में एक गली से होकर जाना पड़ता था इस दौरान

एक मिनट का समय लगता था।

मुझे इस रास्ते से आते-जाते लगभग तीन महीने हुए होंगे। एक दिन मैं अपने घर पहुंचा तथा घर का दरवाजा खोलने ही वाला था तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे पीछे कोई है। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ एक कुत्ता खड़ा था जो मुझे शायद कुछ कहना चाहता था। मैंने भी उससे पूछने लगा कि क्या हुआ, तुम्हें कुछ चाहिए क्या। लेकिन वह कुत्ता वहीं खड़ा रहा अपनी पूछ हिलाने लगा। मैंने उससे पूछा कि क्या तुम्हें खाना चाहिए। मैंने उसे प्रतीक्षा करने को कहा। मैंने घर का मुख्य दरवाजा खोला और घर की घंटी बजायी। कुत्ता भी मेरे पीछे पीछे अंदर घुस गया था। मेरी पत्नी ने घर का दरवाजा खोलते हुए पूछती है यह कहाँ से आया है। मैंने अपनी पत्नी से बिस्कुट या ब्रैड मांगा। मेरी पत्नी ने मेरे हाथों में बिस्कुट ला कर दे दिया। मैंने बिस्कुट को फर्श पर रखा। वह कुत्ता बिस्कुट खाकर मेरे घर से निकल गया। मैंने दरवाजा बंद कर दिया तथा अपने कमरे में प्रवेश किया। मैंने सोचा कि कुत्ता निश्चित ही भूखा था तथा भोजन की तलाश में था। मेरे लिए यह अच्छा अनुभव रहा कि मैंने उसको भोजन दिया।

प्रत्येक दिन की भांति अगले दिन मैं ऑफिस के लिए घर से निकला और दिन में कार्य करने के पश्चात मैं वापस घर लौट रहा था। मैं आश्चर्यचकित हो गया मैंने जब जी.टी. रोड से अपनी गली में पहुंचा (जो कि साइकल से घर पहुँचने में केवल एक मिनट का रास्ता था) तो देखता हूँ कि वह कुत्ता दौड़ कर आता है तथा मेरे पीछे-पीछे घर तक आता है। पिछले दिन के तरह ही मैंने उसे कुछ खाने को दिया। वह खाना खाकर चला गया। यह घटना प्रतिदिन घटित हो रही थी। मैं जब भी जी.टी. रोड से निकलकर उस गली में जाता हूँ ये मेरे साइकल के पीछे-पीछे दौड़ने लगता है। इसका मतलब यह हुआ कि जी.टी. रोड तथा उस गली के कोने पर मेरी प्रतीक्षा करता है। मैंने भी उसे प्रतिदिन भोजन देने लगा। लेकिन एक बात जो मुझे बार-बार यह सोचने पर मजबूर कर रहा था कि इसे घड़ी की अनुभूति नहीं है फिर भी कैसे यह मेरे वापस लौटने के समय को भांप जाता है।

दूसरी घटना :- अब मैं एक और सच्ची घटना बताने जा रहा हूँ जो करीब 40 वर्ष पहले घटित हुई थी जिसे मैं अपने मस्तिष्क से कभी निकाल नहीं सका। यह घटना मेरे पुराने घर के क्षेत्र के आस-पास की है। उस क्षेत्र में एक 'लालू' नाम की कुतिया रहती थी। लालू अपने क्षेत्र सभी की लाडली थी क्योंकि इसका स्वभाव अच्छा था तथा यह विनम्र प्रवृति की थी। इसने एक बार 5 पिल्लों को जन्म दिया जिसमें केवल 2 ही बच पाएँ। ये दोनों कुत्ते भी अब पूरी तरह से बड़े हो गए थे तथा इसी क्षेत्र में ही रहा करत्ते थे। उन दोनों कुत्तों का नाम 'कालू' एवं 'टॉमी' था। कालू और टॉमी को भी उस क्षेत्र के

सभी लोग प्यार किया करते थे क्योंकि ये दोनों का भी स्वभाव अच्छा था। उस क्षेत्र के सभी घरों से इन दोनों के लिए खाना उपलब्ध होता था। ये दोनों रात को अपने क्षेत्र की रखवाली किया करते थे। एक दिन इनके जीवन में एक 'काला साया' आया। उस क्षेत्र से जी.टी. रोड नजदीक था। ये दोनों अक्सर जी.टी. रोड के पास जाया करते थे जहां दिन रात अनेक गाडियाँ चलती रहती हैं। एक दिन टॉमी को जी.टी. रोड पार कर रहा था तब उसी समय वह एक गाड़ी के नीचे आ जाता है।

हमारे इलाके के बहुत सारे लोग इस खबर को सुनने के बाद जी.टी. रोड के तरफ चल दिए ताकि वे अपना दुख व्यक्त कर सकें। केवल एक गली के कुत्ते की मौत पर उस इलाके के लोगों के द्वारा यह मामला लगभग तीन दिन तक चला। कोई व्यक्ति यह नहीं सोच पा रहा था कि अब आगे क्या होगा। टॉमी का भाई कालू जी.टी. रोड पर ही बैठकर रोया करता था जहां पर इसके भाई की मृत्यु हुई थी। हमलोगों लगा कि ऐसा होना स्वाभाविक है आखिरकार खून का रिश्ता जो था। तब हमलोगों बहुत आश्चर्य हुआ कि कालू उस जगह को छोड़कर और कहीं नहीं जा रहा है। वहाँ वह सुबह से रात ओर रात से सुबह बैठा रहता तथा उसके आँखों में आँसू भरा रहता। एक सप्ताह ऐसे ही गुजरा। उसने खाना खाना भी बंद कर दिया था। एक सप्ताह के बाद भी कालू वहीं पर बैठा रहा, न वह हिल रहा था, न खाना खा रहा था, बस वह केवल रोये जा रहा था।

लगभग एक महीने के बाद, उस सदमे के दर्द को निरंतर सहने के कारणवश भूखे रहने से कालू की मृत्यु हो गई। कालू अपनी अंतिम सांस ठीक वहीं लेता है जिस स्थान पर इसके भाई की मृत्यु हुई थी। कालू अभी 2 वर्ष और जीवित रहता किन्तु भाई के आकस्मिक मृत्यु से शोकाकुल होकर उसने भी अपनी खूबसूरत ज़िंदगी गंवा दी। इलाके के लोग कालू को का बार-बार खाने को दिये लेकिन कालू ने उसे छुआ तक नहीं। कालू को ऐसा प्रतीत होता था कि जब इसका भाई अब नहीं रहा तो इसके जीवन का भी कोई अर्थ न था।

आज कि दौड़ में मनुष्यों के जीवन में भी भाई वियोग बहुत कम ही दिखलाई पड़ता है। मैं अपने अनुभव से यह कहता हूँ कि आज कोई भी इंसान

अपने भाई की मृत्यु पर केवल तीन दिन भी भोजन त्याग नहीं कर सकता। मैंने तथा मेरे क्षेत्र के कई लोगों ने इस कालू से भाई प्रेम का पाठ सीखा। मुझे यह ज्ञात नहीं है कि यह घटना किसको-किसको याद होगा लेकिन यह घटना को मैं कभी भूल नहीं सका। भगवान से यही विनती है कि कालू का जन्म इंसान रूप में हो।

रेबती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण

प्राचीनकाल से ही हमारे भारतवर्ष में नारी को शक्ति का स्वरूप मानकर उसकी पूजा होती रही है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में यह वर्णित है कि सृष्टि की कल्पना को साकार करने हेतु विधाता को नारी शक्ति की आवश्यकता का अनुभव हुआ और नारी के आगमन के पश्चात् ही सृष्टि का विस्तार सम्भव हो सका। सावित्री से लेकर गार्गी, कौशल्या, सुमित्रा, सती अनुसूइया, सीता, उर्मिला की बात हो या महारानी लक्ष्मीबाई, कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, सावित्री बाई फुले, इन्दिरा गांधी आदि की हमें नारी के संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति की झलक स्वयमेव दिख जाती है। नारी को शक्ति स्वरूपा माना जाता है, किन्तु बड़ी अजीब विडम्बना है कि आज उसी नारी की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि देश में नारी सशक्तिकरण की कल्पना को मूर्त रूप प्रदान किए जाने हेतु जोर शोर से निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

यदि हम वर्तमान स्थिति पर नजर डालें तो आज भी भारतीय समाज में नारी को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है,जिसकी वह वास्तव में अधिकारी है। आज भी समाज पुरुष प्रधान ही माना जाता है जहाँ नारी को केवल दोयम दर्जा प्राप्त है। नारी को अपने अस्तित्व की रक्षा तथा अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़े तो यह आश्चर्य की बात नहीं है। भले ही हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं किन्तु नारी आज भी बंधन मुक्त नहीं है। अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा तथा दहेज प्रथा आदि की समस्याएं

समाज में बुरी तरह फैली हुई हैं और आए दिन कोई न कोई महिला इनका शिकार होती रहती है। पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, शिक्षा तथा नौकरी में व्यवधान एवं पुनर्विवाह को लेकर संकीर्ण मानसिकता के चलते भी समाज ने महिलाओं की स्थिति खराब करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी हैं। ऐसी ही विभिन्न परिस्थितियों के कारण नारी सशक्तिकरण का विचार अस्तित्व में आया। जिसके माध्यम से नारी को सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक रूप से सम्पन्न बनाते हुए उसके सर्वांगीण विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

सशक्तिकरण का अर्थ शक्ति सहित निरन्तर गतिमान रहने वाली विकासात्मक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से निर्बल को सबल बनाया जा सकता है। एक पूर्ण सशक्त व्यक्ति वह है, जो अपने समस्त निर्णयों हेतु स्वतंत्र हो, जिसे जीवन हेतु आवश्यक संसाधन बिना किसी भेदभाव के साथ प्राप्त हो तथा उस पर किसी प्रकार का घरेलू या सामाजिक अनुचित दबाव न हो। महिलाओं के सम्बन्ध में तो सशक्तिकरण और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उनकी प्रगति के बिना देश प्रगति नहीं कर सकता। महिला सशक्तिकरण को हम महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के रूप में समझ सकते हैं जिससे उन्हें शिक्षा, नौकरी/रोजगार तथा आर्थिक सम्पन्नता के पर्याप्त अवसर मिल सकें और वे सामाजिक स्वतंत्रता एवं उन्नति प्राप्त कर सकें।

महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से नारी को शोषण एवं उत्पीडन से मुक्ति दिलाने के साथ-साथ उसके सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास के प्रयास किए जाए तथा उसे विकास के समान अवसर प्रदान किए जाएं। महिलाओं को समाज में समानता एवं सम्मान दिलाना, आत्मनिर्भर बनाना, उनकी निजता की रक्षा, निर्णय लेने एवं कार्य करने की स्वतन्त्रता, नीति निर्धारण में भागीदारी के अवसर, स्वावलम्बन, निर्भयता आवश्यक सुरक्षा तथा अवसर की समानता आदि की सहायता से नारी को शक्ति सम्पन्न बनाना ही महिला सशक्तिकरण है। इस सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाओं के साथ-साथ देश एवं समाज की प्रगति एवं

विकास के उद्देश्य को पूर्ण करने के लक्ष्य को भी ध्यान में रखा गया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि महिला सशक्तिकरण क्यों आवश्यक है?किसी भी संतुलित सामाजिक व्यवस्था के लिए विकास के क्षेत्र में पुरुषों तथा महिलाओं दोनों की समान भागीदारी आवश्यक है। साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक स्त्री की प्रगति पर समाज तथा देश की प्रगति भी अवश्य निर्भर करती है। एक महिला समाज एवं परिवार में बेटी, बहन, पत्नी, बहू, सास आदि नातों के साथ-साथ शिक्षक, चिकित्सक, नर्स, वकील तथा पुलिसकर्मी आदि के रूप में भी अपनी सेवाएं देती है। इस प्रकार उसकी सोच, समझ एवं कार्य व्यवहार का व्यापक प्रभाव परिवार एवं समाज पर अवश्य होता है। ऐसे में एक सुशिक्षित महिला अपने बच्चों की शिक्षा तथा परिवार के निर्णयों में भाग लेती है, उसकी आर्थिक सबलता उसे आत्मनिर्भर एवं स्वाभिमानी बनाती है। सामाजिक स्थिति में सुधार होने से वह सामाजिक बदलाव का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम होती है। विधिक सशक्तिकरण उसे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने में सहायक तो, राजनीतिक सशक्तिकरण के माध्यम से वह देश एवं समाज के विकास में भागीदारी करती है। शारीरिक एवं भावनात्मक सबलता उसके चहुँमुखी विकास में सहायता करती हैं। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण के माध्यम से न केवल नारी शक्ति, बल्कि उसके परिवार, समाज एवं देश के विकास का भी मार्ग प्रशस्त होता है।

हमारे देश में आज भी महिलाओं की बड़ी आबादी सामाजिक कुरीतियों से जूझ रही है। उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं, साथ ही अशिक्षा, रोजगार के अवसरों में असमानता, रूढिवादी परम्पराओं की समस्या, कार्यस्थल पर शोषण, घरेलू हिंसा, यौन अपराध, बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, मजदूरी में असमानता, आर्थिक एवं राजनैतिक स्वतन्त्रता की कमी आदि अनेक कारण हैं, जिनके चलते देश में महिला सशक्तिकरण एक अनिवार्यता बन चुका है। इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए देश में महिला सशक्तिकरण हेतु निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। चूँकि किसी भी देश की प्रगति में उसके सभी नागरिकों का योगदान होता है तथा उनके विकास पर देश का विकास निर्भर करता है, अतः देश में महिला सशक्तिकरण के बिना देश की उन्नति का स्वप्न देखना केवल कोरी कल्पना ही कहा जाएगा।

आज देश में बेटी बचाओ, बेटी पढाओ, उज्ज्वला, सपोर्ट टू ट्रेनिंग एण्ड एम्प्लॉयमेण्ट प्रोग्राम फॉर वूमेन, महिला शक्ति केन्द्र, महिला हेल्पलाइन, पंचायती राज में महिलाओं हेतु आरक्षण, स्वयंसेवी महिला समूहों के गठन, शिक्षा तथा नौकरी हेतु पर्याप्त अवसर, स्वरोजगार/

स्वव्यवसाय हेतु पर्याप्त सहायता, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण, बालिका शिक्षा पर विशेष बल एवं वित्तीय सहायता आदि के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। इसी प्रकार अनैतिक व्यापार रोकथाम अधिनियम 1956, दहेज रोक अधिनियम 1961, समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976, लिंग परीक्षण तकनीक (निषेध) एक्ट 1994, बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006 तथा कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण सम्बन्धी अधिनियम 2013 आदि के माध्यम से महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों पर नियन्त्रण लगाए जाने हेतु सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। इन सबके बीच सामाजिक परिवर्तन के एक नए युग का भी सूत्रपात हुआ है, जिसके चलते महिलाओं को परिवार, समाज तथा कार्यस्थल पर पर्याप्त सम्मान मिलने लगा है। आज महिलाएं आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक रूप से अधिक के सबल हो रही हैं तथा उनकी प्रगति से देश की प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है।

यह सत्य है कि महिला सशक्तिकरण हेतु किए जा रहे प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं और भारतीय महिलाओं ने न केवल देश, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। आज हमारे देश में महिलाएं विभिन्न विभागों में महत्वपूर्ण पदों पर सेवारत हैं और नारी सशक्तिकरण की मिसाल बनकर उभरी हैं। इसी प्रकार कृषि, उद्योग-धन्धों, शिक्षा एवं समाज कार्यों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है और उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में भी सुधार हुआ है, किन्तु इस सबके साथ ही महिलाओं के शोषण एवं उत्पीड़न में भी वृद्धि हुई है और उनके विरुद्ध होने वाले अपराध भी कम नहीं हो सके हैं। समाज का एक वर्ग आज भी महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित है तथा उसे महिला सशक्तिकरण से कोई सरोकार नहीं है। महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं को अधिकार दिलाने एवं उनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने से ही सम्बन्धित नहीं है, बल्कि उनकी निजता की सुरक्षा और सम्मान भी परम आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी निजता है तथा उस निजता की रक्षा भी उसका अधिकार है। महिलाओं के संदर्भ में तो निजता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी प्रकार उनका सम्मान किया जाना भी आवश्यक है। वस्तुत: महिला सशक्तिकरण भी तभी सफल माना जा सकता है जब महिलाओं की निजता की सुरक्षा और सम्मान उसमें निहित हो। जरा सोचिए कि यदि केवल नारी सशक्तिकरण के आँकड़ों को ही लक्ष्य मान लें और नारी की निजता एवं सम्मान की बात न करें, तो क्या महिला सशक्तिकरण को सफल माना जा सकता है? (नहीं)

हमारा लक्ष्य केवल महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनैतिक स्थिति में सुधार

लाना ही नहीं है, बल्कि उनकी निजता की सुरक्षा और सम्मान भी आवश्यक है। यदि नारी की निजता और सम्मान ही सुरक्षित नहीं होगा, तो नारी सशक्तिकरण का लक्ष्य भला कैसे पूर्ण हो सकता है? चाहे महिला सशक्तिकरण हेतु चलाई जा रही योजनाओं के लाभ की बात हो या विभिन्न कानूनों के माध्यम से शोषण के विरुद्ध अधिकार की प्रत्येक स्थिति में तथा प्रत्येक स्तर पर निजता की रक्षा एवं सम्मान अपरिहार्य है, उससे किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जा सकता। यह न केवल आवश्यक, बल्कि अनिवार्य भी है कि महिलाओं की निजता की रक्षा और सम्मान के साथ महिला सशक्तिकरण की सफलता हेतु सार्थक प्रयास किए जाएँ ताकि महिला सशक्तिकरण को सच्चे अर्थों में प्राप्त किया जा सके। एक स्त्री की प्रगति पर ही परिवार, समाज एवं देश की प्रगति निर्भर है और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें नारी सशक्तिकरण हेतु सहयोग करने की आवश्यकता है।

जितेन्द्र शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ)

बंग दर्पण

सन 1757 को प्लासी की लड़ाई में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की हार हुई। राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अँग्रेजी सेना ने सिराजुद्दौला की सेना को आसानी से हरा दिया। एक दृष्टि से यह युद्ध एकतरफा युद्ध था, क्योंकि नवाब की सेना का सेनानायक मीर जाफ़र अंग्रेजों से जा मिला था, ऐसे में सिराजुद्दौला की सेना भला कैसे जीत पाती? सिराजुद्दौला की सेना प्रशिक्षित एवं विशाल थी। सिराजुद्दौला इससे पहले अंग्रेज़ो को कलकत्ता में हरा चुका था। मीर जाफ़र यदि विश्वासघात नहीं करता तो सिराजुद्दौला को हराना असंभव था। युवा सिराजुद्दौला की हार किसी त्रासदीपूर्ण नाटक की भांति ही है। सिराजुद्दौला का अंत बेहद क्रूर और भयावह है, जो कि अंग्रेजी शासन के वास्तविक कपटी चरित्र को प्रकट करता है।

मशहूर इतिहासकार सैयद ग़ुलाम हुसैन खाँ ने अपनी किताब 'सियारूल मुताखिरी' में सिराजुद्दौला के छिपकर भागने का प्रयास करने की घटना का वर्णन किया है। वे लिखते है कि सिराजुद्दौला बिलकुल सादे कपड़ों में भागे थे। उनके साथ उनके विश्वस्त रिश्तेदार और किन्नर भी थे। उन्होंने अपनी पत्नी लुत्फ-उन-निसा को ढँकी हुई गाड़ी में बिठाया। वे लोग जितना सोना-जवाहरात अपने साथ ले सकते थे, लेकर राजमहल छोडकर भाग गए।

वे दो दिन तक कई नाव बदलकर इधर-उधर भटकते रहें। इधर मीर जाफ़र ने बंगाल की सत्ता

को अपने कब्जे में कर लिया। मीर जाफ़र का बेटा मीरान सिराजुद्दौला को पागलों की तरह ढूंढ रहा था। सिराजुद्दौला और उसके परिजन सादे भेष में भटक रहे थे। दो दिनों से उन लोगों ने कुछ नहीं खाया था। भूख के मारे वे बेहाल हो गए थे। वे एक नदी किनारे रुककर खिचड़ी पकाने लगे। उसी इलाके के एक फकीर ने उन्हें पहचान लिया और इसकी सूचना सिराजुद्दौला को ढूँढने वालों को दे दी। यह खबर पाकर मीर जाफ़र का दामाद मीर कासिम हथियार से लैस अपनी सेना की टुकड़ी लेकर सिराजुद्दौला को घेर लिया।

सिराजुद्दौला को 2 जुलाई 1757 को मुर्शिदाबाद लाया गया। उस समय राबर्ट क्लाइव मुर्शिदाबाद में ही मौजूद थे। सिराजुद्दौला को बंदी के रूप में मीर कासिम के समक्ष पेश किया गया। यह आधी रात का समय था और सिराजुद्दौला भय से थर-थर काँप रहा था। उन्होने काँपते हुए अपने प्राणों की भीख मांगी। सिराजुद्दौला बंदी के रूप में जिस मीर जाफ़र से जीवनरक्षा की गुहार लगा रहा था, वह चंद दिन पहले उसका अधीनस्थ कमांडर था और सिराजुद्दौला वहाँ के नवाब थे। पर स्थिति अब बिल्कुल भिन्न थी।

मीर जाफर अपने दरबारियों के साथ सलाह-मशविरा करने लगे कि सिराजुद्दौला के साथ कैसा बर्ताव किया जाये। कुछ ने सिराजुद्दौला को मुर्शिदाबाद में ही कैद करने की सलाह दी। किसी दरबारी ने उन्हें मुर्शिदाबाद से बाहर किसी अज्ञात स्थान पर भेजने की सलाह दी। किसी ने सिराजुद्दौला

को मौत की सजा देने की सलाह दी। मीर जाफ़र का 17 वर्षीय बेटा मीरान सिराजुद्दौला की हत्या करने पर उतारू था। मीरान बेहद खूंखार, जिद्दी और क्रूर किस्म का व्यक्ति था। उसे अंदेशा था कि सिराजुद्दौला को जिंदा रखने पर जनता में विद्रोह की भावना उमड़ सकती है अतः उसकी हत्या आवश्यक है।

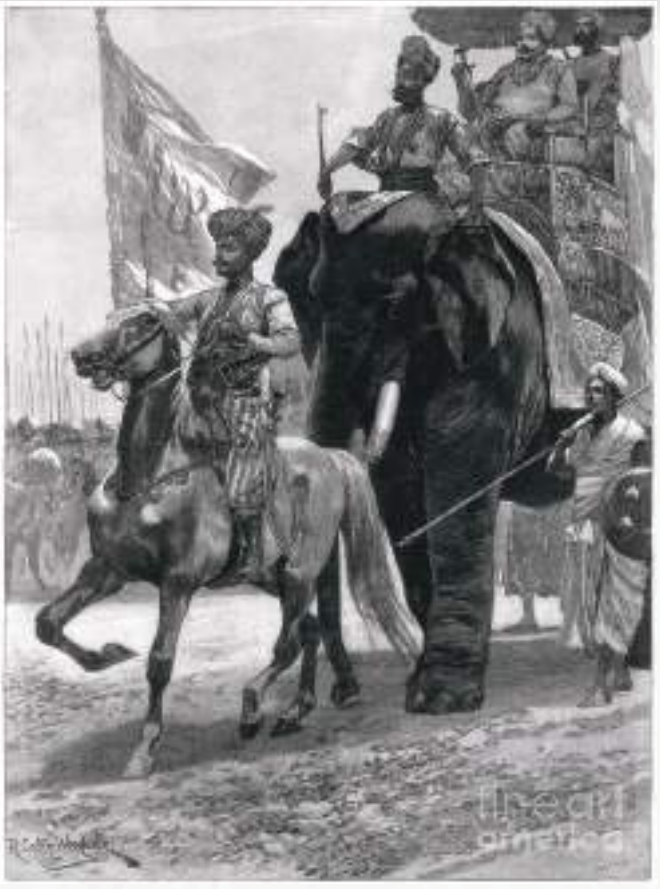

अंततः मीर जाफ़र बिना किसी ठोस निर्णय लिए मध्यरात्रि के दरबार को समाप्त किया। सिराजुद्दौला अब मीरान के कब्जे में था। सैयद ग़ुलाम हुसैन खाँ की किताब के अनुसार मीरान ने अपने साथियों को सिराजुद्दौला को खत्म करने का हुक्म दिया। मीरान अपने सशस्त्र साथियों के साथ सिराजुद्दौला के पास पहुंचा। सिराजुद्दौला को अंदाजा हो गया कि उसका मरना तय है। उसने उनसे वज़ू कर नमाज़ पढ़ने की इजाजत मांगी। मीरान और उसके साथियों में धैर्य नहीं था, उनकी आँखों में हिंसा की आग धधक रही थी। उन्होने पानी से भरा एक बर्तन उसके सर पर उड़ेल दिया। सिराजुद्दौला को लगा कि उसे वज़ू नहीं करने दिया जाएगा तो उसने पीने के लिए पानी मांगा। तभी मीरान का एक साथी अपनी कटार से सिराजुद्दौला पर वार किया। तत्क्षण सभी हिंसक पशु की भांति एक साथ सिराजुद्दौला पर पिल पड़ें। कुछ ही मिनटों में सिराजुद्दौला की बर्बरतापूर्वक हत्या कर दी गयी।

अगले दिन मीरान ने क्रूरता और बर्बरता का अगला अध्याय शुरू किया। सिराजुद्दौला के लहूलुहान शरीर को एक हाथी के पीठ पर लाद कर मुर्शिदाबाद की गलियों और बाज़ारों में घुमाया गया, ताकि सिराजुद्दौला के प्रति सहानुभूति प्रकट करने का साहस किसी में नहीं हो। मीरान यहीं थमने वाला नहीं था। उसने सिराजुद्दौला की पत्नी लुत्फ-उन-निसा को छोड़कर उसके परिवार के सभी औरतों को मरवा दिया। ये औरतें या तो जहर देकर मारी गयी या इन्हें हुगली नदी में डुबाकर मारा गया।

नवाब सिराजुद्दौला की हत्या जब की गयी तब उसकी उम्र 25 वर्ष थी। ऐसा कहा जाता है कि सिराजुद्दौला की पत्नी लुत्फ-उन-निसा बहुत सुंदर थी। मीर जाफ़र और उसके बेटे मीरान दोनों ने लुत्फ-उन-निसा से विवाह करने का पैगाम भिजवाया। परंतु उसने दोनों के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

प्लासी की लड़ाई के बाद मीर जाफ़र बंगाल का नवाब बना। वह बेहद अयोग्य सिद्ध हुआ। वह अपना सारा समय नृत्य देखने और अफीम के नशे में बिताने लगा। उसके बेटे मीरान की क्रूरता और बढ़ गयी। वह अलीवर्दी खाँ के परिवार में बचे-खुचे लोगों को चुन-चुन कर मारने लगा। बंगाल को लूटकर राबर्ट क्लाइव बेहद अमीर हो चुका था। इधर बंगाल की जनता कुशासन के कारण भीषण गरीबी एवं भुखमरी का शिकार हो गयी। मुर्शिदाबाद जो कभी बेहद सम्पन्न शहर हुआ करता था, वह कुछ सालों में कंगाल बन गया। औपनिवेशिक लूट की यह प्रस्थान बिन्दु मानी जा सकती है, जो धीरे-धीरे पूरे भारत में फैल गयी।

चन्दन कुमार बढ़ई
(हिन्दी अधिकारी)

टिफिन

"मुझे आज स्कूल नहीं जाना।" 8 वर्षीय मोनु ने ये बात अपनी माँ से कही। उसकी बात सुनकर मोनु की माँ को कोई अचरज नहीं हुआ, क्योकि जब से नए स्कूल में उसका दाखिला हुआ है तब से मोनु स्कूल जाने को लेकर आनाकानी करता रहता है। मोनु के पिता का हाल ही में तबादला हुआ था।

अपने पुराने स्कूल में वह बाकी बच्चों के साथ काफी घुलामिला था। पर नए शहर में न वह पड़ोस के बच्चों और न ही स्कूल के सहपाठियों से बात कर पा रहा था।

जब उसे पिता से उनके तबादले की बात पता चली तो वह बहुत खुश था, उसने सोचा कि अब वह नई जगह पर जाएगा और नई नई चीज़ें अनुभव करेगा। अब उसे ये बात खटकने लगी थी कि उसके पुराने पड़ोस के मित्र एवं स्कूल के सहपाठी शायद कभी नहीं मिलेंगे। खैर किसी तरह माँ ने उसे स्कूल जाने के लिए तैयार किया, उसके बस्ते में टिफिन रखा और स्कूल बस में बैठा दिया। मुंह लटकाए मोनु अपनी माँ को देखता रहा और बस चल पड़ी।

बस जब स्कूल के सामने रुकी तो सभी बच्चे जल्दी-जल्दी बस से उतरने लगे और मोनु भारी

कदमों से धीरे धीरे उतरा जैसे वो स्कूल का गेट बंद होने का इंतज़ार कर रहा हो। उसकी मंशा जान कर गार्ड ने उसे बांह पकड़ कर जबरदस्ती अंदर कर दिया और मोनु बस देखता रह गया। अब प्रार्थना सभा के बाद वह अपनी कक्षा में घुसा। इस कक्षा में वो अक्सर आखिरी बेंच पर ही बैठता था क्योंकि किसी सहपाठी से आज तक उसकी किसी तरह की कोई बात हुई नहीं थी। नए स्कूल के पहले दिन टीचर ने उसका परिचय सभी से कराया था, पर इसके आगे बात बढ़ी नहीं। जब मोनु के पिता का तबादला हुआ था तब वह स्कूल के मध्य वर्ष में था, शायद इसलिए भी उसे दिक्कत हो रही थी।

अब कक्षा को शुरू हुए कुछ समय हो गया था। मोनु को लगा आज का दिन भी बाकी दिनों जैसा ही होने वाला है। तभी प्रधानाध्यापक का प्रवेश कक्षा में हुआ और उन्होने टीचर से धीमे स्वर में कुछ कहा और फिर कक्षा को संबोधित करते हुए बोले, "आज इस कक्षा में एक नए छात्र का दाखिला हुआ है।" और फिर उन्होने नए छात्र को अपना परिचय देने बोला। उसने लड़खड़ाते हुए बोला, "मेरा नाम अंकुश राज है और मैं 8 साल का हूँ।" और फिर अंकुश सिर नीचे किए आखिरी बेंच पर मोनु के बगल में बैठ गया। मोनु अब पशोपेश में था, एक बार तो उसे लगा कि शायद वह इससे मित्रता कर सकता है, पर इस नए छात्र को इस बारे में कोई रूचि नहीं हुई तो उसके लिए समस्या हो जाएगी क्योंकि मोनु के लिए फिर यह खाली बेंच किसी ऐसे के साथ साझा करना मुश्किल हो जाएगा जिससे वह बात भी ना कर सके। ये सबकुछ मोनु के दिमाग में चल ही रहा था कि अंकुश ने अचानक से उससे पूछा, "मुझे टाइम टेबल चाहिए, मुझे दिखा दो मैं कॉपी कर लूँगा।" इतना सुनते ही मोनु मन ही मन बहुत खुश हो गया। उसने टाइम टेबल दिखाने में जरा भी देर नहीं की। फिर मोनु ने साहस करते हुए उसे अपना नाम बताया, अंकुश को थोड़ा अचरज हुआ तो उसने बोला, "मेरे घर में सब मुझे रिंकू बुलाते है, तुम्हारे स्कूल का नाम क्या है?" मोनु ने कहा उसका यही एक नाम है। रिंकू को फिर आश्चर्य हुआ, पर फिर उसने कहा, "मैं आज टिफिन में वेज सैंडविच और सेब लाया हूँ, तुम्हारे टिफिन में क्या है? मोनु को ये बात पता ही नहीं थी कि माँ ने आज उसके लिए क्या बनाया है, पर फिर भी उसने बोला, "आज माँ ने टिफिन मे सूजी का हलवा दिया है।" मोनु की माँ अक्सर उसे सूजी का हलवा ही दिया करती थी।

खैर टिफिन की घंटी बजी और अंकुश ने तुरंत ही अपने बस्ते से टिफिन निकाल कर खोल दिया, पर ये देख कर मोनु सोच में पड़ गया कि अगर उसने अपना टिफिन खोला और टिफिन में से सूजी का हलवा नहीं निकला तो अंकुश उसे झूठा समझेगा

और शायद कल से वो इसके साथ बैठना पसंद नहीं करेगा। मोनु ये सब सोच ही रहा था कि अंकुश ने उसे टिफिन खोलने के लिए टोक दिया। मोनु ने आँख बंद करके टिफ़िन खोल दिया, क्योंकि वो खुद को शर्मिंदा होते हुए देखना नहीं चाहता था। उसके आँख बंद ही थे कि तभी उसे अंकुश की आवाज़ सुनाई दी, ""मोनु... मोनु...", मोनु अपनी आंखें खोलना नहीं चाहता था पर फिर उसे अंकुश की आवाज़ सुनाई दी, "मोनु?" मोनु ने आँखें खोली और सामने अंकुश कि तरफ देखा क्योंकि वह टिफिन के तरफ देखना नहीं चाहता था। पर अंकुश ने मुस्कुराते हुए कहा, "अब अपना हलवा मुझे भी दो खाने को!" मोनु ने टिफिन के तरफ देखा, उसके सांस में सांस आई क्योंकि टिफिन में हलवा ही था। दोनों बच्चे अपना अपना टिफिन एक दूसरे से साझा कर खाने लगे। मोनु अब काफी खुश लग रहा था।

लंच के बाद के पीरियड्स में भी दोनों के बीच काफी बातें हुई और मोनु को पता चला कि अंकुश का परिवार भी उसके ही तरह अपने पिता के तबादले के कारण इस शहर में आया है। ये सब बातें समझकर मोनु अब काफी अच्छा महसूस कर रहा था। स्कूल खत्म हुआ, दोनों बच्चों ने एक दूसरे से विदा ली, पर इस बार मोनु खुश था। वह कल स्कूल वापस आने के लिए उत्सुक था। बस से जब वह उतर कर अपने घर में घुसा तो उसकी माँ को उसके चेहरे पर एक चमक दिखी पर माँ ने कुछ सवाल नहीं किया। रात के खाने पर मोनु अपनी माता पिता की बातों को भी ध्यान से सुन रहा था। इसके बाद सभी सो गए। अगले दिन सुबह मोनु अपनी माँ से पहले उठ गया और उन्हे जगाते हुए बोला, "उठो माँ मुझे स्कूल जाना है।"

अतुल कुमार
लेखाकार

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ।

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियाँ।